|| काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व ||

रस, छन्द एवं अलंकार

(1) रस

रस शब्द की व्युत्पत्ति **'रसस्यतेऽसौ इति रसः'** के रूप में हुई है; अर्थात् 'जो चखा जाय' या 'जिसका आस्वादन किया जाय' अथवा 'जिससे आनन्द की प्राप्ति हो'; वही रस है। आचार्यों ने भी रस को काव्य की आत्मा कहा है।

रस के चार अंग माने गये हैं—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

(i) स्थायी भाव

सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। यही भाव रसत्व को प्राप्त होते हैं।

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने स्थायी भाव नौ माने हैं। उन्हीं के आधार पर नौ रस माने जाते हैं—

स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव	रस
(1) रति	शृंगार	(6) भय	भयानक
(2) हास	हास्य	(7) जुगुप्सा	वीभत्स
(3) शोक	करुण	(8) विस्मय	अद्भुत
(4) क्रोध	रौद्र	(9) निर्वेद	शान्त
(5) उत्साह	वीर		

बाद में 'वात्सल्य' और 'भक्ति' रस नाम के रस भी स्वीकार किये गये। इनका भी स्थायी भाव रति ही है। जब रति बालक के प्रति होती है तो 'वात्सल्य' और जब भगवान् के प्रति होती है तो 'भक्ति' रस की निष्पत्ति होती है।

(ii) विभाव

जिसके कारण सहृदय को रस प्राप्त होता है, वह विभाव कहलाता है अर्थात् स्थायी भाव का कारण विभाव होता है।

विभाव दो प्रकार के होते हैं—

(क) आलम्बन विभाव, (ख) उद्दीपन विभाव।

(क) आलम्बन विभाव

वह कारण है जिस पर भाव अवलम्बित रहता है—अर्थात् जिस व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आलम्बन कहते हैं और जिस व्यक्ति के मन में स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं उसे आश्रय कहते हैं। पुत्र रोहिताश्व की मृत्यु पर विलाप करती हुई शैव्या आश्रय है और रोहिताश्व आलम्बन है। यहाँ शोक स्थायी भाव है।

(ख) उद्दीपन विभाव

जो आलम्बन द्वारा उत्पन्न भावों को उद्दीप्त करते हैं उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं, जैसे भय स्थायी भाव को उद्दीप्त करने के लिए सिंह का गर्जन, उसका खुला मुँह, जंगल की भयानकता आदि उद्दीपन विभाव हैं।

(iii) अनुभाव

स्थायी भाव के जागरित होने पर आश्रय की बाह्य चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं, जैसे भय उत्पन्न होने पर हक्का-बक्का हो जाना, रोंगटे खड़े होना, काँपना, पसीने से तर हो जाना आदि।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि बिना किसी भावोद्रेक के केवल भौतिक परिस्थिति के कारण यदि ये चेष्टाएँ दिखलायी पड़ती हैं तो उन्हें अनुभाव नहीं कहेंगे; जैसे जाड़े के कारण काँपना, गर्मी से पसीना निकलना आदि।

(iv) संचारी भाव

आश्रय के मन में उठने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। ये मनोविकार पानी के बुलबुलों की भाँति बनते-मिटते रहते हैं, जबकि स्थायी भाव अन्त तक बने रहते हैं।

प्रत्येक रस का स्थायी भाव तो निश्चित है पर एक ही संचारी अनेक रसों में हो सकता है, जैसे शंका शृंगार में भी हो सकती है और भयानक में भी, स्थायी भाव भी दूसरे रस में संचारी भाव हो जाते हैं, जैसे हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' शृंगार रस में संचारी भाव बन जाता है। संचारी भाव को 'व्यभिचारी' भाव भी कहा जाता है।

शृंगार रस और वीर रस

ऊपर कई रसों के नाम बताये जा चुके हैं। उनमें से **पाठ्यक्रमानुसार शृंगार** और **वीर रस** की कुछ आवश्यक बातें नीचे लिखी जा रही हैं—

(1) शृंगार रस

"प्रेमी और प्रेमिका के मन में स्थित स्थायी भाव—रति या प्रेम-से उत्पन्न आनन्द को 'शृंगार' रस कहा जाता है।" शृंगार रस के दो भेद हैं—संयोग और वियोग अथवा विप्रलम्भ। जिस रचना में नायक-नायिका के मिलन का वर्णन होता है, वहाँ संयोग शृंगार और जहाँ इनके वियोग या विरह का वर्णन होता है वहाँ विप्रलम्भ शृंगार होता है।

उदाहरण

(1) **संयोग**—**'लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए।**
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥'

यहाँ रतिभाव की आश्रय सीता हैं। आलम्बन राम हैं। उद्दीपन लता मण्डप आदि हैं। राम का मोहक रूप तथा लोचनों का ललचाना और अपलक दृष्टि से देखना आदि अनुभाव हैं। अभिलाषा, हर्ष आदि संचारी हैं। इस प्रकार रति स्थायी भाव के जागरित होने से शृंगार रस की पूर्ण निष्पत्ति हो रही है।

(2) **वियोग**—'हे खग-मृग हे मधुकर स्रेनी, तुम देखी सीता मृग नैनी।'

(2) वीर रस

युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए हमारे हृदय में निहित स्थायी भाव 'उत्साह' के जाग्रत होने के प्रभावस्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे 'वीर रस' कहा जाता है। विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से पूर्णता को प्राप्त होने वाले उत्साह नामक स्थायी भाव से वीर रस उत्पन्न होता है।

उदाहरण

मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे॥
है और की बात ही क्या गर्व मैं करता नहीं।
मामा तथा निज तात से भी समर में डरता नहीं॥

अभिमन्यु का यह कथन अपने सारथी के प्रति है। यहाँ पर कौरव आलम्बन, अभिमन्यु आश्रय, अभेद्य चक्रव्यूह की रचना उद्दीपन तथा अभिमन्यु के वाक्य अनुभाव हैं। गर्व, औत्सुक्य, हर्ष आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के संयोग से वीर रस निष्पन्न हुआ है।

(2) छन्द

छन्द काव्य के प्रवाह को लययुक्त, संगीतात्मक, सुव्यवस्थित और नियोजित करता है। छन्दबद्ध होकर भाव अधिक प्रभावशाली, अधिक हृदयग्राही और स्थायी हो जाता है। छन्द काव्य को स्मरण योग्य बना देता है।

छन्द के प्रत्येक चरण में वर्णों का क्रम अथवा मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

मात्रा

मात्रा के भेद से वर्ण दो प्रकार के होते हैं—ह्रस्व एवं दीर्घ। वर्ण के उच्चारण काल में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहा जाता है। 'अ, इ, उ, ऋ' के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी एक मात्रा होती है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा इनके संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी दो मात्राएँ मानी जाती हैं। व्यंजन स्वतः उच्चरित नहीं हो सकते हैं। अतः मात्रा गणना स्वरों के आधार पर होती है। ह्रस्व और दीर्घ को पिंगलशास्त्र में क्रमशः लघु और गुरु कहते हैं। लघु का चिह्न है '।' तथा गुरु का चिह्न 'ऽ' है।

यति (विराम)

छन्द की एक लय होती है। उसे गति या प्रवाह भी कहते हैं। लय का ज्ञान अभ्यास पर निर्भर है। छन्दों में विराम के नियम का पालन भी किया जाता है। छन्द के प्रत्येक चरणों में उच्चारण करते समय मध्य या अन्त में जो विराम होता है उसे 'यति' कहा जाता है।

पाद या चरण

छन्द में प्रायः चार पंक्तियाँ होती हैं। छन्द की एक पंक्ति का नाम 'पाद' है। इसी पाद को उस छन्द का चरण कहा जाता है। पहले और तीसरे चरण को विषम तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं।

उदाहरण—

विलसता कटि में पट पीत था।
रुचिर वस्त्र-विभूषित गात था।
लस रही उर में वनमाल थी।
कल-दुकूल-अलंकृत स्कंध था।

इस छन्द में चार पंक्तियाँ (चरण) हैं। एक-एक पंक्ति चरण या पाद हैं। कुल चार चरण वाले छन्दों को दो पंक्तियों में भी लिख देने की प्रथा चल पड़ी है।

गुरु-लघु

(1) अनुस्वार युक्त (ं) वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए, 'संत' और हंस शब्द के सं और हं वर्ण गुरु हैं। (2) विसर्ग (:) से युक्त वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए, अतः शब्द में 'त' गुरु वर्ण है। (3) संयुक्ताक्षर से पूर्व का लघु वर्ण गुरु माना जाता है, जैसे 'गन्ध' शब्द में 'न्ध' संयुक्ताक्षर है। अतः 'ग' लघु होते हुए भी गुरु (दो मात्रा का) है। परन्तु जब संयुक्ताक्षर से पूर्व वर्ण पर अधिक बल नहीं रहता, तब वह लघु ही माना जाता है। जैसे, 'तुम्हारे' में 'तु' लघु है। (4) चन्द्रबिन्दु से युक्त लघु वर्ण लघु ही रहता है जैसे, 'हँसना' का 'हँ' लघु है। (5) कभी-कभी दीर्घ वर्ण भी आवश्यकतानुसार ह्रस्व पढ़ा जाता है, जैसे, 'करत जो वन सुर नर मुनि भावन' में 'जो' दीर्घ ही पढ़ा जायगा। इसी प्रकार 'अवधेश के द्वारे सकारे गयी, में 'के' दीर्घ होते हुए भी लघु ही पढ़ा जायगा। तात्पर्य यह है कि किसी ध्वनि का लघु अथवा गुरु होना उसके उच्चारण में लिए गये समय पर निर्भर है।

छन्द के प्रकार

1. वर्णिक, **2.** मात्रिक, **3.** मुक्तक।

(1) वर्णिक छन्द—वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण का निर्माण वर्णों की एक निश्चित संख्या एवं लघु गुरु के क्रम के अनुसार होता है। वर्णिक वृत्तों में अनुष्टुप, द्रुतविलम्बित, मालिनी, शिखरिणी आदि प्रसिद्ध हैं।

(2) मात्रिक छन्द—मात्रिक छन्द वे हैं जिनकी रचना में चरण की मात्राओं की गणना होती है। दोहा, सोरठा, रोला, चौपाई आदि मात्रिक छन्द हैं।

(3) मुक्तक छन्द—हिन्दी में स्वतन्त्र रूप से आज लिखे जा रहे छन्द मुक्तक छन्द हैं, जिनमें वर्ण मात्रा का कोई बन्धन नहीं है।

पाठ्यक्रमानुसार मात्रिक छन्दों में चौपाई का लक्षण और उदाहरण निम्नलिखित है :

चौपाई छन्द

चौपाई के प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अन्त में 2 दीर्घ (गुरु) होता है।

उदाहरण—

बंदउँ गुरु-पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
ऽ।। ।।।। ।।। ।ऽऽ ।।। ।ऽ। ।।। ।।ऽऽ
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।
।।। ऽ।।। ऽ।। ऽऽ ।।। ।।। ।। ।। ।।ऽऽ

दोहा

इस छन्द के पहले एवं तीसरे चरण में तेरह-तेरह एवं दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

ऽ। ऽ। ।। ऽ। ।।
राम नाम मणि-दीप धरु, 13 मात्राएँ
ऽ। ऽ।ऽ ऽ।
जीह—देहरी द्वार, 11 मात्राएँ
।। ऽ ऽ।। ऽ।।।
तुलसी भीतर बाहिरहु, 13 मात्राएँ
ऽ ऽ।।।।ऽ।
जो चाहसि उजियार।। 11 मात्राएँ

अन्य उदाहरण

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परे, स्याम हरित दुति होइ।।

(3) अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ानेवाले उपकरणों को अलंकार कहते हैं। इसके प्रयोग से शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है, अतः अलंकार को काव्य का आवश्यक अंग माना गया है।

अलंकारों के दो भेद किये गये हैं—(1) शब्दालंकार, (2) अर्थालंकार।

जब केवल शब्दों में चमत्कार पाया जाता है तब शब्दालंकार और जब अर्थ में चमत्कार होता है तब अर्थालंकार कहलाता है। नीचे कुछ प्रमुख अलंकारों का वर्णन किया जा रहा है :

1. शब्दालंकार में अनुप्रास, यमक और श्लेष मुख्य हैं। पाठ्यक्रमानुसार इनका परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

(i) अनुप्रास

"जहाँ व्यंजन वर्णों की आवृत्ति होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।"

उदाहरण—'तरनि-तनूजा तट तमाल-तरुवर बहु छाए।"

इस पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ii) यमक

"जहाँ पर एक ही शब्द की अनेक बार भिन्न अर्थों में आवृत्ति हो वहाँ पर यमक अलंकार होता है।"

उदाहरण—

केकी रव की नूपुर ध्वनि सुन
जगती, जगती की भूख प्यास।

इस उदाहरण में जगती शब्द दो बार आया है और इसके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। जगती का पहला अर्थ जागना और दूसरा अर्थ पृथ्वी है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण

खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा।।

यहाँ प्रथम 'कुल' शब्द का अर्थ समूह है। द्वितीय, तृतीय कुल-कुल शब्द पक्षियों के कुल-कुल कलरव के सूचक हैं। कुल शब्द के भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

(iii) श्लेष

"जहाँ किसी शब्द के एक बार प्रयुक्त होने पर उसके एक से अधिक अर्थ हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।"

उदाहरण—

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

इस उदाहरण में तीसरा 'पानी' शब्द श्लिष्ट है और इसके यहाँ तीन अर्थ हैं—चमक (मोती के पक्ष में), प्रतिष्ठा (मनुष्य के पक्ष में), जल (चूने के पक्ष में), अतः इस दोहा में 'श्लेष' अलंकार है।

अन्य उदाहरण—

गुन ते लेत रहीम जन, सलिल कूप ते काढ़ि।
कूपहुं से कहुं होत है, मन काहू को बाढ़ि।।

इस दोहे में गुन शब्द श्लिष्ट है। गुण का एक अर्थ है 'रस्सी' तथा दूसरा अर्थ है 'गुण'। अतएव इसमें श्लेष अलंकार है।

2. अर्थालंकार में उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

●●●

‖ हिन्दी व्याकरण तथा शब्द-रचना ‖

क : वर्तनी एवं विराम-चिह्न

● वर्तनी

'हिन्दी' की यह विशेषता है कि इस भाषा को जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है। भाषा का मौखिक रूप ही उसका मूल रूप होता है। मौखिक भाषा अस्थायी होती है तथा अपने आस-पास स्थित श्रोताओं तक ही सीमित रहती है, जबकि लिखित रूप स्थायी तथा व्यापक होता है जो भावी पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहता है। अतः यह आवश्यक है कि 'शुद्ध उच्चारण' तथा 'शुद्ध वर्तनी' दोनों के शुद्ध स्वरूप की समुचित जानकारी प्राप्त की जाय।

'वर्तनी' अंग्रेजी शब्द का हिन्दी पर्याय है इसका शाब्दिक अर्थ है–'वर्तन' अर्थात् अनुवर्तन करना (पीछे-पीछे चलना)। लेखन व्यवस्था में वर्तनी शब्द स्तर पर शब्द की ध्वनियों का अनुवर्तन करती है।

वर्तनी भाषा के स्वरूप को निश्चित करती है। अतः यहाँ पर आवश्यक है कि वर्तनी से संबंधित त्रुटियों एवं अशुद्धियों पर विचार करके उसके 'मानक रूप' की जानकारी प्राप्त की जाय तथा वर्तनी में पायी जाने वाली अनेकरूपता एवं विविधता को समाप्त किया जाय क्योंकि भाषा के लिए वर्तनी की एकरूपता आवश्यक होती है। हिन्दी के वर्तनी संबंधी कुछ महत्त्वपूर्ण नियम नीचे दिए जा रहे हैं। इन पर ध्यान दीजिए तथा लेखन में इन्हीं का प्रयोग कीजिए–

❑ **हिन्दी वर्णों के मानक रूप**—

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने हिन्दी वर्णों के निम्नलिखित मानक रूप निर्धारित किये हैं–

पुराने रूप	**नये एवं मानक रूप**
ऋ, ऋा, ऋो, ऋौ, ऋं, ऋः	अ, आ, ओ, औ, अं, अः
रव, छ, झ, ल, श, रा, क्ष	ख, छ, झ, ल, श, ण, क्ष

❑ **संयुक्ताक्षर (संयुक्त वर्ण)**—

हिन्दी में तीन प्रकार के व्यंजन हैं–

(क) पाई वाले : जैसे – ख, ग, च, ज आदि।

(ख) जिनके मध्य में पाई है : जैसे – क, फ।

(ग) पाई रहित : जैसे – ट, ठ, ड, ढ आदि।

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप बनाने के लिए इनकी पाई को हटा दिया जाता है। जैसे – श्लोक, कच्चा, न्याय, प्यास आदि।

(कच्चा की जगह 'कच्चा', सज्जन की जगह 'सज्जन', कुत्ता की जगह 'कुत्ता', बिल्ली की जगह 'बिल्ली', गन्ना की जगह 'गन्ना' लिखना अमान्य है)

'क' और 'फ' से संयुक्ताक्षर बनाते समय इनके पीछे का भाग जो नीचे की ओर जाता है, उसे हटा दिया जाता है। जैसे– पक्का, रफ्तार।

(पक्का की जगह 'पक्का' अमान्य है।)

❑ बिना पाई वाले व्यंजनों की संयुक्ताक्षरों में हलंत (्) चिह्न का प्रयोग करना चाहिए। जैसे –

ट् + ट = ट्ट (लट्टू)   ड् + ड = ड्ड (लड्डू)

ठ् + य = ठ्य (पाठ्य) द् + य = द्य (विद्या)
द् + व = द्व (द्वार) ह् + न = ह्न (चिह्न)
ह् + ल = ह्ल (प्रह्लाद) ह् + व = ह्व (आह्वान)
ह् + म = ह्म (ब्रह्म) द् + ध = द्ध (विद्ध)
द् + य = द्य (पद्य) ह् + य = ह्य (असह्य)
द् + द = द्द (गद्दा)

(लट्टू को 'लट्टू', लड्डू को 'लड्डू', पाठ्य को 'पाठ्य', विद्या को 'विद्या', द्वार को 'द्वार', चिह्न को 'चिह्न', प्रह्लाद को 'प्रह्लाद', आह्वान को 'आह्वान', ब्रह्म को 'ब्रह्म', सिद्ध को 'सिद्ध', पद्म को 'पद्म' तथा असह्य को 'असह्य' लिखना नये नियमों के अनुसार अमान्य है।)

- क् + त को 'क्त' के रूप में लिखा जाना चाहिए न कि 'क्त' के रूप में जैसे भक्ति के स्थान पर 'भक्ति' लिखना अमान्य है।
- हल् चिह्न से युक्त वर्णों से बनने वाले संयुक्ताक्षरों में द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व किया जाना चाहिए, पूरे जोड़े के साथ नहीं, जैसे–

गलत प्रयोग	**सही प्रयोग**
सिद्धियाँ	सिद्धियाँ
द्वितीय	द्वितीय
गद्दियाँ	गद्दियाँ
पट्टियाँ	पट्टियाँ

● विभक्ति-चिह्न

- '**विभक्ति चिह्न**'—संज्ञा शब्दों से अलग लिखे जाने चाहिए।
जैसे–मेज पर, खेत में , विद्यालय से आदि।
- सर्वनाम शब्द में यदि विभक्ति-चिह्न का प्रयोग हुआ है, तो वह उससे मिलाकर लिखा जाना चाहिए। जैसे–मैंने, उसने आदि।
- सर्वनाम शब्दों में यदि दो विभक्ति-चिह्नों का प्रयोग हुआ है तो पहला विभक्ति चिह्न सर्वनाम शब्द से मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाना चाहिए।
जैसे–उसके लिए, इसमें से आदि।
- यदि सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही', 'भर', 'तक' आदि निपात का प्रयोग हुआ हो, तो विभक्ति को सर्वनाम से अलग लिखा जाना चाहिए।
जैसे–आप ही के लिए, मुझ तक को आदि।
- संयुक्त क्रिया के रूप में प्रयुक्त सभी क्रिया पद अलग-अलग लिखे जाने चाहिए। जैसे–लिख लिया था, पढ़ रहा होगा, आता रहता है आदि।

● योजक (हाइफन)

द्वंद्व समास में पदों के बीच योजक का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जैसे–माता-पिता, दिन-रात आदि। (माता-पिता को 'माता पिता' और दिन-रात को 'दिन रात' लिखना अमान्य है।

तत्पुरुष समास में योजक का प्रयोग केवल वहीं किया जाय, जहाँ इसके प्रयोग के बिना भ्रम की स्थिति की सम्भावना है। जैसे–भू-तत्त्व। भू-तत्त्व को यदि 'भूतत्व' के रूप में लिखा जाय तो इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है।

साधारण स्थिति में तत्पुरुष समास में योजक का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे–गंगाजल, ग्रामवासी, राजकुमार। (गंगाजल को 'गंगा-जल', ग्रामवासी को 'ग्राम-वासी' तथा राजकुमार को 'राज-कुमार' के रूप में लिखना अमान्य है।

- यदि किसी शब्द के साथ 'सा, सी, से' का प्रयोग हुआ हो, तो इनसे पूर्व योजक का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे–तुम-सा, तुम-सी, चाँद-से।

अनुस्वार-अनुनासिक—अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखिए–

- संयुक्ताक्षर बनाते समय यदि किसी वर्ग के हल् पंचमाक्षर (ङ्, ण्, ञ्, न्, म्) के बाद उसी वर्ग का कोई व्यंजन आये तो हल् पंचमाक्षर के स्थान पर केवल अनुस्वार (ं) का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।
  जैसे–गंगा, चंचल, दंत, पंप आदि।
  (गंगा की जगह 'गङ्गा', चंचल की जगह 'चञ्चल', दंत की जगह 'दन्त' और पंप की जगह 'पम्प' लिखना अमान्य है)।

यदि पंचमाक्षर (ङ्, ण्, ञ्, न्, म्) के बाद कोई पंचमाक्षर आ जाय तो, अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा। जैसे–गन्ना, अम्मा, सम्मेलन आदि।

(गन्ना को 'गंना', अम्मा को 'अंमा' और सम्मेलन को 'संमेलन' लिखना अशुद्ध है)।

- जहाँ चंद्रबिंदु के प्रयोग के बिना अर्थ में भ्रम होने का भय बना रहे, वहाँ चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। जैसे–हँस ('हँसना' क्रिया), रँग ('रँगना' क्रिया)।
  यदि हँस के स्थान पर 'हंस' (एक पक्षी) लिख दिया जाय तो 'हंस' का अर्थ हँस से भिन्न हो जायेगा।

इसी प्रकार रँग के स्थान पर 'रंग' लिखने से अर्थ-भेद हो जाता है। रँग का अर्थ है रँगना, जबकि 'रंग' किसी रंग (colour) का द्योतक है।

- अन्य स्थितियों में चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार) के प्रयोग करने की छूट है। जैसे–गम्भीर के स्थान पर 'गंभीर', तम्बू के स्थान पर 'तंबू', बन्दूक के स्थान पर 'बंदूक', घण्टा के स्थान पर 'घंटा', शङ्ख के स्थान पर 'शंख' का प्रयोग किया जा सकता है।

● हिन्दीतर ध्वनियाँ

हिन्दी में अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी किया जाने लगा है। अरबी-फारसी के अक्षरों में नुक्ता लगाया जाता है। जैसे—क़, ख़, ग़, ज़ और फ़।

इस संबंध में यह निर्णय किया गया है कि यदि नुक्ता न लगने के कारण शब्द के अर्थ में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो, तो नुक्ता लगाना चाहिए अन्यथा नहीं। जैसे–नीचे दिए गए शब्दों में देखिए–

सजा (सजाना)	सज़ा (दंड)
खाना (कुछ खाना)	ख़ाना (अल्मारी आदि का ख़ाना)
फन (साँप का फन)	फ़न (हुनर)

ऐसे शब्दों को छोड़कर अरबी-फ़ारसी के शेष शब्द बिना नुक्ता के भी लिखे जा सकते हैं। जैसे–क़लम के स्थान पर कलम, फ़ौरन के स्थान पर फौरन, बाग़ के स्थान पर बाग लिखा जा सकता है।

- अंग्रेजी भाषा की एक नयी ध्वनि 'ऑ' का प्रयोग भी हिंदी में किया जाता है। यदि इस ध्वनि के कारण शब्द के अर्थ में भ्रम उत्पन्न होने का भय हो, तो इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए अन्यथा अंग्रेजी भाषा के शब्द ऑ की ध्वनि के बिना भी लिखे जा सकते हैं।

जैसे–बाल (शरीर आदि के बाल)	बॉल–गेंद
काल (समय)	कॉल–बुलाना
हाल (अभी)	हॉल–एक बड़ा कमरा

ऐसे शब्दों को छोड़कर शेष शब्दों में 'ऑ' का चिह्न लगाना अनिवार्य नहीं है। जैसे–कॉलेज को 'कालेज', डॉक्टर को 'डाक्टर' के रूप में लिखा जा सकता है क्योंकि (˘) के प्रयोग के बिना भी अर्थ में किसी प्रकार के भ्रम की संभावना नहीं है।

दो-दो वर्तनियाँ : हिन्दी में कुछ शब्दों के दो-दो रूप प्रचलन में हैं। ये दोनों रूप ही मान्य हैं। जैसे–

बरतन-बर्तन	गरदन-गर्दन	शरबत-शर्बत	कुरता-कुर्ता
बरफ़-बर्फ़	मरज़ी-मर्ज़ी	वरदी-वर्दी	बिलकुल-बिल्कुल
सरदी-सर्दी	गरमी-गर्मी	दोबारा-दुबारा	आखीर-आखिर

● अन्य नियम

श्रुतिमूलक 'य' और 'व'—जिन स्थलों पर 'य' और 'व' का प्रयोग विकल्प के रूप में होता है, वहाँ केवल स्वर रूपों का ही प्रयोग होना चाहिए।

जैसे–

गलत प्रयोग	**सही प्रयोग**
किये	किए
हुवा	हुआ
नयी	नई
चाहिये	चाहिए
उठाये	उठाए

जिन स्थलों पर 'य' ही मूल ध्वनि हो, वहाँ 'य' का ही प्रयोग मान्य है। जैसे–

गलत प्रयोग	**सही प्रयोग**
स्थाई	स्थायी
दाइत्व	दायित्व

- ❑ हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अव्यय जैसे हो, तो, श्री, मात्र, साथ, तक आदि शब्दों के साथ मिलाकर नहीं बल्कि उनसे पृथक् लिखे जाते हैं, जैसे—
- ❑ प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय शब्दों के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं। जैसे–प्रतिदिन, यथाशक्ति, भाववाचक।
- ❑ प्रतिदिन के स्थान पर 'प्रति दिन', यथाशक्ति के स्थान पर 'यथा शक्ति' और मानवमात्र के स्थान पर 'मानव मात्र' लिखना अशुद्ध एवं अमान्य है।

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया पद के साथ मिलाकर लिखा जाना चाहिए, अलग से नहीं।

जैसे—खाकर, सोकर, बैठकर आदि।

खाकर के स्थान पर 'खा कर', सोकर के स्थान पर 'सो कर' तथा बैठकर के स्थान पर 'बैठ कर' लिखना अशुद्ध तथा अमान्य है।

उच्चारण और वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनका निराकरण

भाषा को शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध उच्चारण का अत्यंत महत्त्व है। हिन्दी के सन्दर्भ में तो यह बात और भी सत्य है क्योंकि यह भाषा जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। हिन्दी में जो अशुद्धियाँ दिखाई देती हैं उसका मुख्य कारण अशुद्ध उच्चारण ही है। नीचे उन शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं, जिनके उच्चारण में सामान्यतः शुद्धियाँ होती हैं :

1. मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	अनाधिकार	अनधिकार	अद्वितिय	अद्वितीय
अत्याधिक	अत्यधिक	अनुकुल	अनुकूल	आधीन	अधीन
अनुसूया	अनसूया	अलोकिक	अलौकिक	अतिथी	अतिथि
अहिल्या	अहल्या	अहार	आहार	आजकाल	आजकल
आयू	आयु	आशिर्वाद	आशीर्वाद	ईशवर	ईश्वर
उन्नती	उन्नति	एक्य	ऐक्य	ओद्यौगिक	औद्योगिक
कवी	कवि	कवियित्री	कवयित्री	कृतघन	कृतघ्न
केंद्रिय	केंद्रीय	क्षत्रीय	क्षत्रिय	क्योंकी	क्योंकि
कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु	चहिए	चाहिए
चहर दीवारी	चहारदीवारी	तत्कालिक	तात्कालिक	त्यौहार	त्योहार
दयालू	दयालु	दिवाली	दीवाली	दिक्षा	दीक्षा
दावात	दवात	निरिह	निरीह	निरिक्षण	निरीक्षण
नदीयाँ	नदियाँ	नराज़	नाराज़	निरसता	नीरसता
निरोग	नीरोग	परिवारिक	पारिवारिक	पुरूष	पुरुष
पुर्व	पूर्व	पुज्य	पूज्य	पुजनिय	पूजनीय
पत्नि	पत्नी	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
पूर्ती	पूर्ति	पुर्ण	पूर्ण	प्राप्ती	प्राप्ति
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	प्रशन	प्रश्न	प्रभू	प्रभु
बिमार	बीमार	बुद्धी	बुद्धि	मुनी	मुनि
मधू	मधु	व्यक्ती	व्यक्ति	श्रीमति	श्रीमती
शक्ती	शक्ति	शुन्य	शून्य	शिशू	शिशु
साधू	साधु	सुर्य	सूर्य	सामिग्री	सामग्री
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	संसारिक	सांसारिक	हानी	हानि

2. सन्धि नियमों के उल्लंघन की अशुद्धियाँ

अनाधिकारी	अनधिकारी	अत्याधिक	अत्यधिक	अत्योक्ति	अत्युक्ति
इतिहासिक	ऐतिहासिक	उतपात	उत्पात	उपरोक्त	उपर्युक्त

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
छत्रछाया	छत्रच्छाया	जगत्नाथ	जगन्नाथ	जगतगुरू	जगद्गुरु
तदोपरांत	तदुपरांत	दुशील	दुश्शील (दुःशील)	देविंद्र	देवेंद्र
दुरवस्था	दुरावस्था	निश्वास	निःश्वास	निरस	नीरस
महिंदर	महेंद्र	मनोस्थिति	मनःस्थिति	मनहर	मनोहर
सन्हार	संहार	सम्मार्ग	सन्मार्ग	सन्मुख	सम्मुख

3. यी–ई–ये–ए की अशुद्धियाँ

अव्यईभाव	अव्ययीभाव	आये	आए	उठाये	उठाए
गयी	गई	चाहिये	चाहिए	जायें	जाएँ
जाये	जाए	दाइत्व	दायित्व	देखिये	देखिए
नयी	नई	बताइये	बताइए	महिलायें	महिलाएँ
स्थाई	स्थायी				

4. अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों की अशुद्धियाँ

अभीष्ठ	अभीष्ट	कनिष्ट	कनिष्ठ	गढ्ढा	गड्ढा
घनिष्ट	घनिष्ठ	जिव्हा	जिह्वा	झूट	झूठ
धंदा	धंधा	धोका	धोखा	पथ्थर	पत्थर
बघ्घी	बग्घी	ब्राम्हण	ब्राह्मण	भूक	भूख
मखखन	मक्खन	मिष्टान्न	मिष्ठान्न	लठ्ठा	लट्ठा
वृध्दा	वृद्धा	श्रेष्ट	श्रेष्ठ	सीधा-साधा	सीधा-सादा

5. अनावश्यक स्वर या व्यंजन जोड़ने की अशुद्धियाँ

इस्टेशन	स्टेशन	इस्त्री	स्त्री	इस्कूल	स्कूल
इस्थिति	स्थिति	पारक	पार्क	महत्त्वता	महत्ता
श्रृंगार	शृंगार	स्त्राप	शाप	स्वरग	स्वर्ग

6. अक्षर लोप की अशुद्धियाँ

अध्यन	अध्ययन	अनुछेद	अनुच्छेद	उधरण	उद्धरण
परिछेद	परिच्छेद	निश्चिता	निश्चितता	विछिन्न	विच्छिन्न

7. व – ब सम्बन्धी अशुद्धियाँ

बिलास	विलास	पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बिष	विष	बैदेही	वैदेही
बाणी	वाणी	बृष्टि	वृष्टि	बर्षा	वर्षा

8. ऋ और र की अशुद्धियाँ

किरपा, क्रपा	कृपा	क्रिशि	कृषि	क्रितज्ञ	कृतज्ञ
ग्रहस्थ	गृहस्थ	ग्रहीत	गृहीत	ग्रणा	घृणा

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
द्रष्टी	दृष्टि	पैत्रिक	पैतृक	प्रथक	पृथक
भृष्ट	भ्रष्ट	मात्रि	मातृ	रिण	ऋण
रिषि	ऋषि	रितु	ऋतु	श्रंगार	शृंगार
स्रष्टि	सृष्टि	स्मिरति	स्मृति	हृदय	हृदय

9. 'र' के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद	उत्तीरण	उत्तीर्ण
करम	कर्म	कार्यकर्म	कार्यक्रम	कर्मशः	क्रमशः
कर्मधार्य	कर्मधारय	चन्दर	चंद्र	तीवर	तीव्र
धरम	धर्म	परसाद	प्रसाद	परसन्न	प्रसन्न
परणाम	प्रणाम	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा	परसिद्ध	प्रसिद्ध
परापत	प्राप्त	प्रमात्मा	परमात्मा	प्रीक्षा	परीक्षा
पवित्तर	पवित्र	मरयादा	मर्यादा	मूरख	मूर्ख
वजर	वज्र	स्रेय	श्रेय	सौहार्द्र	सौहार्द
सहस्त्र	सहस्र	समुन्दर	समुद्र	स्रोज	सरोज
स्त्रोत	स्रोत	सार्मथ्य	सामर्थ्य	हिंस्त्र	हिंस्र

10. ज्ञ और ग्य की अशुद्धियाँ

आग्या	आज्ञा	कृतग्य	कृतज्ञ	ग्यापन	ज्ञापन
ग्यान	ज्ञान	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा	भाज्ञ	भाग्य
यग्य	यज्ञ	योज्ञ	योग्य	विग्यान	विज्ञान

11. न, ङ और ण की अशुद्धियाँ

आक्रमन	आक्रमण	आचरन	आचरण	कारन	कारण
किरन	किरण	गँड़ेश	गणेश	गड़ित	गणित
गनेश	गणेश	गुन	गुण	गनित	गणित
तृन	तृण	निरीक्षन	निरीक्षण	पुन्य	पुण्य
प्रान	प्राण	प्रनाम	प्रणाम	वेंड़ी	वेणी
रनभूमि	रणभूमि	रामायन	रामायण	वर्निक	वर्णिक
शरन	शरण	स्मरन	स्मरण	टिप्पनी	टिप्पणी
चरन	चरण				

12. र, ल, ड़ के उच्चारण की अशुद्धियाँ

उजारना	उजाड़ना	लराई	लड़ाई	लरकी	लड़की

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
13. श, ष तथा स की अशुद्धियाँ					
असोक	अशोक	अमावश्या	अमावस्या	आदर्स	आदर्श
देस	देश	नास	नाश	नमश्कार	नमस्कार
पुस्प/पुश्प	पुष्प	प्रशाद	प्रसाद	प्रसंसा	प्रशंसा
भविश्य/भविस्य	भविष्य	रास्ट्र	राष्ट्र	विस्वास	विश्वास
शाशन	शासन	शंकट	संकट	शुशोभित	सुशोभित
साखा	शाखा	सासन	शासन	सर्म	शर्म
सक्ति	शक्ति	साम	शाम	साम	सायं
14. ट के स्थान पर ठ अथवा ठ के स्थान पर ट सम्बन्धी अशुद्धियाँ					
अभीष्ठ	अभीष्ट	घनिष्ट	घनिष्ठ	निष्टा	निष्ठा
विशिष्ठ	विशिष्ट	श्लिष्ठ	श्लिष्ट	संतुष्ठ	संतुष्ट
15. क्ष के स्थान पर छ सम्बन्धी अशुद्धियाँ					
छमा	क्षमा	छेम	क्षेम	छेत्र	क्षेत्र
नच्छत्र	नक्षत्र	लछमी	लक्ष्मी	लच्छन	लक्षण
16. य, ज की अशुद्धियाँ					
अजोध्या	अयोध्या	जोनि	योनि	जमराज	यमराज
जजमान	यजमान	जोग्य	योग्य	जोग	योग
17. पंचम अक्षर की अशुद्धियाँ					
अन्ग	अंग	कन्ठ	कंठ	कन्व	कण्व
कुन्डली	कुंडली	घन्टा	घंटा	दन्डित	दंडित
पन्क	पंक	पन्खा	पंखा	मन्डल	मंडल
मयन्क	मयंक	शन्ख	शंख	सन्सार	संसार
सन्कट	संकट	सून्ड	सूँड	हिन्सा	हिंसा
18. ड़ और ढ़ की अशुद्धियाँ					
काड़ना	काढ़ना	खिढ़की	खिड़की	चड़ना	चढ़ना
टेड़ा	टेढ़ा	दृड़	दृढ़	प्रौड़ा	प्रौढ़ा
फाढ़ना	फाड़ना	बूड़ा	बूढ़ा	मड़ना	मढ़ना
19. चंद्रबिंदु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ					
अँगुली	अंगुली	अंधेरा	अँधेरा	आंख	आँख
ऊंचा	ऊँचा	ऊंट	ऊँट	कँस	कंस

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कँगन	कंगन	कँगाल	कंगाल	कँचन	कंचन
कांच	काँच	गंवार	गँवार	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ	जँग	जंग
ठँडा	ठंडा	तँग	तंग	दांत	दाँत
दूंगा	दूँगा	पांचवां	पाँचवाँ	पँख	पंख
बांसुरी	बाँसुरी	रँग	रंग	रँक	रंक
वहां	वहाँ	शँकर	शंकर	सँगम	संगम
सन्यासी	संन्यासी	संवारना	सँवारना	हंसमुख	हँसमुख

20. व्यंजन गुच्छों में अशुद्धियाँ

अगिनि	अग्नि	उपलक्ष	उपलक्ष्य	उदेश्य	उद्देश्य
उज्वल	उज्ज्वल	कृप्या	कृपया	गवाले	ग्वाले
चिन्ह	चिह्न	द्वंद	द्वंद्व	परारंभ	प्रारंभ
परसिद्ध	प्रसिद्ध	ब्राम्हण	ब्राह्मण	महात्म	महात्म्य
मध्यान्ह	मध्याह्न	वांगमय	वाङ्मय	शुद्द	शुद्ध
सकूल	स्कूल	सटेशन	स्टेशन	सकंध	स्कंध
स्वास्थय	स्वास्थ्य				

विराम-चिह्न

विराम किसे कहते हैं?—विराम का अर्थ है — रुकना या ठहरना। किसी भी भाषा को बोलते समय बीच-बीच में या अंत में हम कुछ क्षणों के लिए लिए रुकते हैं, अर्थात् एक भाव की अभिव्यक्ति के बाद कुछ देर के लिए रुकते हैं यह रुकना ही 'विराम' कहलाता है। इस विराम को प्रकट करने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है जो 'विराम-चिह्न' कहलाते हैं।

परिभाषा–''वाक्य के बीच-बीच में तथा अंत में विराम को प्रकट करने के लिए निर्धारित चिह्नों को 'विराम-चिह्न' कहते हैं।''

आजकल हिंदी भाषा एवं अंग्रेजी भाषा में कुछ लिए गये विराम-चिह्न इस प्रकार हैं–

1. अल्पविराम (,) (Comma)–पढ़ते या बोलते समय थोड़ा रुकने के लिए अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–सीता, गीता और सुनीता। यह सुन्दर वृक्ष, जो तुम देख रहे हो, आम का वृक्ष है।

2. अर्द्ध-विराम (;) (Semi-colon)–जहाँ अल्पविराम से कुछ समय अधिक रुकना हो वहाँ अर्द्ध-विराम का प्रयोग किया जाता है। अल्पविराम तथा पूर्णविराम के बीच का यह चिह्न है; जैसे–वे गुरु जी के प्रवचन में मग्न हैं; भला जल्दी कैसे आ सकते हैं?

3. पूर्ण-विराम (।) (Full-Stop)—जहाँ वाक्य पूर्ण हो जाता है वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग होता है; जैसे–वह प्रयागराज गया है।

4. योजक (-) (Hyphen)–योजक का अर्थ है–जोड़ने वाला। जो चिह्न दो पदों को आपस में जोड़ता है वह योजक चिह्न कहलाता है। इसे समासबोधक चिह्न भी कहते हैं; जैसे–

माता-पिता, सीता-राम, चाचा-भतीजा आदि।

5. निर्देशक चिह्न (Dash)–यह योजक चिह्न से आकार में बड़ा होता है। विषय-विभाग संबंधी प्रत्येक शीर्ष के वाक्यों, वाक्यांशों अथवा दो के मध्य समय या भाव को विशिष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा—तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

6. विवरण चिह्न (Colon and Dash)—कोई भी विवरण देने के लिए विवरण से पूर्व जो चिह्न लगाया जाता है, उसे विवरण चिह्न कहा जाता है; जैसे—

वचन दो होते हैं—एकवचन, बहुवचन।

7. प्रश्नवाचक चिह्न (Question Mark)—प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में पूर्णविराम के स्थान पर प्रश्नवाचक चिह्न (?) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

तुम्हारा नाम क्या है? वह कौन है?

8. विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Exclamation)—आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को दर्शाने या प्रकट करने वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक या संबोधनबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

हे भगवान् ! यह क्या हो गया। छिः! तुमने चोरी क्यों की है?

9. उद्धरणबोधक चिह्न (Inverted Commas)—जब किसी की उक्ति को ज्यों-का-त्यों उद्धृत किया जाता है, तब वहाँ उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

हरिवंशराय बच्चन की कविता—"आ रवि की सवारी" में सूर्य का अत्यंत सुन्दर वर्णन किया गया है।

10. कोष्ठक चिह्न ([ ], ( ), { }) (Brackets)—इसका प्रयोग पद का अर्थ बताने के लिए क्रमसूचक अंकों एवं अक्षरों के शब्द से अलग व्यक्त करने के लिए तथा नाटक या एकांकी के भावों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इन्हें कोष्ठक के भीतर लिखा जाता है। ऐसी सामग्री प्रायः मुख्य वाक्य का अंग नहीं होती; जैसे—

लिंग दो प्रकार के होते हैं—(1) पुल्लिंग तथा (2) स्त्रीलिंग।

11. लोप चिह्न या अपूर्णतासूचक चिह्न (XXX, ...) (Incompletion Mark)—समय या स्थान के अभाव में जब पूरा उद्धरण न देकर उसका कुछ अंश छोड़ दिया जाता है तो उस छोड़े गए अंश के स्थान पर लोप चिह्न या अपूर्ण चिह्न लगा देते हैं।

(1) कविताओं के उद्धरणों के बीच में से छोड़े गए भाग के स्थान पर लगाया जाता है; जैसे—

राखी मुख पर घूँघट डाले,

× × ×

चुपके से तुम आए।।

(2) गद्यात्मक उद्धरणों में छोड़े गए स्थान पर ऐसा होता है—

"भूख और निराशा की स्थिति में तुम अपनी कल्पना करके देखो",

.... घट में एक ही राम रमते हैं।

12. संक्षेप चिह्न (o) (Abbreviation Mark)—शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसके लिए संक्षिप्त शब्द के बाद शून्य के चिह्न (o) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

प्रोफेसर — प्रो॰, डॉक्टर — डॉ॰, मेरठ विश्वविद्यालय — मे॰ वि॰ वि॰, चौधरी–चौ॰ आदि।

13. समतासूचक चिह्न (=) (Is Equal to)—जब एक वस्तु की तुलना या समानता दूसरी वस्तु से प्रकट की जाती है तो दोनों के बीच समानतासूचक चिह्न (=) लगा देते हैं; जैसे—

1 मीटर = 100 सेंटीमीटर = 1000 मिलीमीटर।

14. परणतिसूचक चिह्न (>) (Greater than sign)—किसी वर्ण अक्षर के विकास की दशा का बोध कराने के लिए परिणतिसूचक चिह्न (>) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—नृत्य > नच्च > नाच।

15. हंसपद चिह्न (^) (Caret)—लिखते समय वाक्य में जब कोई अंश छूट जाता है तो छूटे हुए स्थान पर हंसपद का चिह्न लगाकर छूटे शब्द या अंश को ऊपर या हाशिए में लिख दिया जाता है; जैसे—

प्रेमचन्द हिंदी के ^(महान्) उपन्यासकार थे।

वचन ^(तीन) प्रकार के होते हैं।

16. रेखांकन चिह्न (__) (Underline)—वाक्य में किसी विशेष शब्द या अंश पर ध्यान आकृष्ट करने के लिए उसके नीचे रेखा खींच दी जाती है। इसी को रेखांकन चिह्न कहते हैं; जैसे–

राजा दशरथ के चार पुत्र थे।

17. निर्देश चिह्न (→) (Reference sign)—शोधन या प्रूफ रीडिंग में इस चिह्न का प्रायः प्रयोग होता है। जब कोई बात अन्यत्र लिखनी हो तो उसे यथास्थान लाने के लिए निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—सीता है → सुंदर लड़की।

18. पुनरुक्ति चिह्न ('') (Ditto)—जब ऊपर की पंक्ति में लिखी गई बात को ज्यों-का-त्यों नीचे की पंक्ति में दुहराना हो तो पुनरुक्तिसचूक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

महादेवी वर्मा हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान ,, ,, ,, ,,।

19. टिप्पणीसूचक चिह्न (*) (Note or asterisk sign)—साहित्यिक लेखादि लिखते समय किसी भाव या ग्रंथ आदि पर टिप्पणी करनी होती है तो उस विचार को उद्धृत करके, उसके अंत में टिप्पणीसूचक चिह्न लगा दिया जाता है; जैसे—

रामचरितमानस* हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।

20. समाप्तिसूचक चिह्न (– या – 0 –) (The End)—किसी निबन्ध, कहानी, नाटक, पुस्तक आदि की समाप्ति पर अंतिम पंक्ति के नीचे समाप्तिसूचक चिह्न लगाया जाता है; जैसे—

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
छिन्न विजय-माता-सी।
- - - - - - (पथ के साथी)

ख : शब्द-रचना

तत्सम और तद्भव

तत्सम शब्द—'तत्सम' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'तत् + सम' जिसका अर्थ है–'उसके समान'। 'उसके समान' से यहाँ तात्पर्य है—'स्रोत भाषा के समान'। हिंदी में बहुत से शब्द संस्कृत से सीधे आ गये हैं और आज भी संस्कृत के मूल शब्दों की ही भाँति हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। इन्हीं शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है; जैसे—धन, नारी, पुष्प, जलज, दिवस, भूमि, सर्वदा, गौरव, विद्वान, अग्नि, अद्भुत, पृथ्वी, रात्रि, उत्कृष्ट, अहंकार, सुंदर, साहस, क्रूर, विद्युत, सौंदर्य, किरण, दर्शन, दुर्गम, ममता, प्रकाश, स्वप्न, प्रमोद, दिव्य, सीमा, राष्ट्र, रवि, शनैः-शनैः, भव्य, संतोष आदि।

तद्भव शब्द—'तद्भव' शब्द का अर्थ है—'उससे होना'। अर्थात् वे शब्द जो 'स्रोत भाषा' के शब्दों से विकसित हुए हैं। इन शब्दों का विकासक्रम दिखाते हुए इनके मूल रूप (स्रोत) तक पहुँचा जा सकता है। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर

पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए हिंदी तक पहुँचे हैं, अतः इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है; जैसे—'दही' शब्द 'दधि' से तथा 'कान्ह' शब्द 'कृष्णा' से विकसित होकर हिंदी में आए हैं। ऐसे शब्दों को तद्भव शब्द कहा जाता है। इन शब्दों के कुछ अन्य उपयोगी उदाहरण देखिए :

तत्सम-तद्भव शब्दों के उदाहरण

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अस्थि	हड्डी	अम्बा	अम्मा	आम्र	आम	अँगुली	उँगली
अंधकार	अँधेरा	अट्टालिका	अटारी	अग्र	आगे	अश्रु	आँसू
अर्द्ध	आधा	अंध	अंधा	अग्नि	आग	अक्षि	आँख
अद्य	आज	आश्रय	आसरा	आश्चर्य	अचरज	उलूक	उल्लू
उष्ट्र	ऊँट	उज्ज्वल	उजाला	उत्थान	उठाना	उच्च	ऊँचा
एकत्र	इकट्ठा	ओष्ठ	होंठ	कर्ण	कान	कपाट	किवाड़
कज्जल	काजल	कपोत	कबूतर	काक	कौआ	कातर	कायर
कृपा	किरपा	कृष्ण	किशन	कर्म	काम	कमल	कँवल
कार्य	काज	काष्ठ	काठ	कुंभकार	कुम्हार	कुपुत्र	कपूत
कूप	कुआँ	कोष्ठ	कोठा	कोकिल	कोयल	क्षार	खार
क्षेत्र	खेत	क्षीर	खीर	क्षण	छन	गृह	घर
ग्रन्थि	गाँठ	ग्राहक	गाहक	गणना	गिनती	गर्दभ	गधा
ग्राम	गाँव	गर्त	गड्ढा	घृत	घी	घट	घड़ा
चंद्र	चाँद	चर्म	चाम	चटका	चिड़िया	चर्मकार	चमार
चैत्र	चैत	चक्र	चाक	चंद्रिका	चाँदनी	छत्र	छाता
छिद्र	छेद	ज्येष्ठ	जेठ	जंघा	जाँघ	जिह्वा	जीभ
जीर्ण	झीना	त्वम्	तुम	त्वरित	तुरंत	दश	दस
दशम	दसवाँ	दंत	दाँत	दीपक	दीया	दधि	दही
दंड	डंडा	दुग्ध	दूध	दुर्बल	दुबला	द्वि	दो
धूम्र	धुआँ	धैर्य	धीरज	नव	नया, नौ	नग्न	नंगा
नासिका	नाक	निद्रा	नींद	नृत्य	नाच	पंच	पाँच
पत्र	पत्ता	पर्यंक	पलंग	पक्षी	पंछी	पक्व	पक्का
पाद	पाँव	पृष्ठ	पीठ	पिपासा	प्यास	पुत्र	पूत
प्रिय	प्यारा	प्रहर	पहर	बाहु	बाँह	भ्रमर	भौंरा
भक्त	भगत	भ्रातृ	भाई	भगिनी	बहन	भिक्षा	भीख
महिषी	भैंस	मित्र	मीत	मयूर	मोर	मस्तक	माथा
मृत्यु	मौत	मनुष्य	मनुज	मुख	मुँह	मुष्टि	मुट्ठी
मक्षिका	मक्खी	मौक्तिक	मोती	मृत्तिका	मिट्टी	माता	माँ
यमुना	जमुना	योगी	जोगी	रत्न	रतन	रात्रि	रात

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
राज्ञी	रानी	रूक्ष	रूखा	लक्ष	लाख	लज्जा	लाज
लोहकार	लोहार	वर्षा	बरखा	वाष्प	भाप	वानर	बंदर
वधू	बहू	वृद्ध	बूढ़ा	वार्ता	बात	विवाह	ब्याह
शिर	सिर	शिक्षा	सीख	शैय्या	सेज	शाक	साग
शर्करा	शक्कर	शुष्क	सूखा	श्वास	साँस	स्तन	थन
श्वसुर	ससुर	श्वश्रु	सास	श्रृंग	सींग	सर्व	सब
सप्त	सात	सर्प	साँप	सत्य	सच	स्वर	सुर
सूत्र	सूत	सूचिका	सूई	सूर्य	सूरज	सौभाग्य	सुहाग
स्वप्न	सपना	हस्ति	हाथी	हृदय	हिय	हस्त	हाथ
हास	हँसी						

विलोम-शब्द

एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द 'विलोम' या विपरीतार्थक कहे जाते हैं।

जैसे—विजय का विलोम पराजय होगा, जबकि जीत का हार। इसी प्रकार स्वतंत्र का विलोम परतंत्र होगा और आजाद का गुलाम।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सबल	दुर्बल	चंचल	स्थिर	प्रश्न	उत्तर
सभ्य	असभ्य	उन्नति	अवनति	उत्तर	दक्षिण
योग्य	अयोग्य	उपकार	अपकार	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
समुख	विमुख	चोर	साधु	एकता	अनेकता
सम	विषम	अनुकूल	प्रतिकूल	एकमुखी	बहुमुखी
रुचिकर	अरुचिकर	कड़वा	मीठा	एड़ी	चोटी
पाप	पुण्य	चल	अचल	एक	अनेक
कर्म	विकर्म	अधिक	न्यून	कल	आज
गगन	धरा	चढ़ाव	उतार	कुपुत्र	सुपुत्र
भाग्यवान	भाग्यहीन	कर्कश	मृदु	आय	व्यय
सुगंध	दुर्गंध	चर	अचर	कार्य	अकार्य
बुराई	अच्छाई	उपस्थित	अनुपस्थित	आशा	निराशा
मूल	अमूल	कठोर	कोमल	परिश्रमी	आलसी
दुर्जन	सज्जन	घृणा	प्रेम	आवश्यक	अनावश्यक
दोष	गुण	आचार	अनाचार	साकार	निराकार
सद्भावना	दुर्भावना	राजा	रंक	आस्तिक	नास्तिक

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सदाचारी	दुराचारी	घटना	बढ़ना	आस्था	अनास्था
सजीव	निर्जीव	गीला	सूखा	आज्ञा	अवज्ञा
उचित	अनुचित	कीर्ति	अपकीर्ति	आकाश	पाताल
सजल	निर्जल	यश	अपयश	अर्थ	अनर्थ
उपयुक्त	अनुपयुक्त	ताप	शीत	अमृत	विष
सगुण	निर्गुण	जल	थल	अपना	पराया
उदार	अनुदार	गरीब	अमीर	अग्रज	अनुज
तीव्र	मंद	ज्ञान	अज्ञान	अस्त	उदय
इहलोक	परलोक	गुण	दोष	ऊँच	नीच
इष्ट	अनिष्ट	गुप्त	प्रकट	ऊष्ण	शीत
तुच्छ	महान्	तिमिर	प्रकाश	उर्वरा	ऊसर
स्वतंत्र	परतंत्र	छाँव	धूप	उजाला	अँधेरा
इच्छा	अनिच्छा	जटिल	सरल	सत्य	असत्य
थोड़ा	बहुत	जय	पराजय	उग्र	शांत
जोड़	घटाव	आदि	अंत	तरुण	वृद्ध
स्थायी	अस्थायी	जीवन	मरण	दिन	रात
जाड़ा	गर्मी	आर्य	अनार्य	आयात	निर्यात
आमिष	निरामिष	दानव	देव	दीप्त	अदीप्त
अभिमान	निराभिमान	अबेर	सबेर	दुःखिया	सुखिया
अवकाश	व्यस्तता	अगेती	पछेती	दुष्कर	सुकर
अम्बर	अवनि	आसक्ति	विरक्ति	कलुष	निष्कलुष
सबल	निर्बल	कल्पनीय	अकल्पनीय	चेतना	अचेतना
अबोध	सुबोध	कीर्ति	अपकीर्ति	दुर्गम	सुगम
अज्ञ	विज्ञ	कपूत	सपूत	दम्भी	निर्दम्भ
अरि	मित्र	घोष	अघोष	अर्द्ध	पूर्ण
धूम	निर्धूम	आविर्भाव	तिरोभाव	घातक	रक्षक
नीरस	सरस	गुरुत्व	लघुत्व	दुर्जन	सज्जन
निरर्थक	सार्थक	अपव्यय	मितव्यय	नवीन	प्राचीन
निर्मल	मलिन	अस्ति	नास्ति	सीत्कार	चीत्कार
उऋण	ऋणी	अकाज	काज	हर्त्ता	कर्त्ता
अनुज	अग्रज	कृत्रिम	प्राकृतिक	वर्णनीय	अवर्णनीय
उन्नति	अवनति	कृपा	अकृपा	विधवा	सधवा
अतीत	भविष्य	कृतज्ञ	कृतघ्न	वरदान	अभिशाप

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कुबुद्धि	सुबुद्धि	विधवा	सधवा	विरोध	समर्थन
कुयश	सुयश	वरदान	अभिशाप	अथ	इति
ग्राह्य	अग्राह्य	विरोध	समर्थन		

पर्यायवाची शब्द

जो शब्द एक-दूसरे के लगभग समान अर्थ देते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थक शब्दों के नाम से जाना जाता है। जैसे—आकाश को गगन, नभ, व्योम, आसमान तथा अम्बर भी कहते हैं। ये सभी शब्द आकाश के पर्यायवाची हैं।

अमृत—पीयूष, सुधा, सोमरस, अमिय, सुरभोग।
अहंकार—गर्व, घमंड, दंभ, अभिमान, दर्प, अहं।
अचरज—अचंभा, आश्चर्य, कौतुक, विस्मय।
असुर—दैत्य, दानव, निशाचर, दनुज, रजनीचर।
अतिथि—पाहुना, मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत।
अधम—नीच, निकृष्ट, भ्रष्ट, पतित।
आम—सौंधव, आम्र, अमृतफल, सौरभ, सहकार।
आँख—नयन, चक्षु, दृग, अक्षि, लोचन, नेत्र।
इच्छा—चाह, अभिलाषा, लालसा, आकांक्षा।
इंद्र—देवेश, सुरेश, देवेंद्र, पुरंदर, देवाधिपति।
ईश्वर—अक्षर, अगोचर, अक्षय, जगदीश्वर, प्रभु, जगन्नाथ, ब्रह्म।
अँधेरा—तम, अंधकार, तिमिर, तमिसु।
उज्ज्वल—उजाला, कांतिमान, प्रकाशित, स्वच्छ, चमकीला, दीप्त।
उदार—दयालु, सुहृद, सदाशय, हृदयालु।
कंजूस—कृपण, क्षुद्र, अनुदार, मक्खीचूस, तंगहस्त।
कबूतर—कपोत, कलकंठ, पारापत, परावत, रक्तलोचन।
कमल—राजीव, नीरज, सरोज, जलज, नलिन।
किनारा—तट, तीर, कगार, कूल।
किसान—काश्तकार, कृषक, क्षेत्रक, क्षेत्रपति, खेतिहर, हलधर, हल।
कुबेर—धनपति, धनी, धनेश, धननाथ, अर्थपति, यक्षराज।
कुत्ता—श्वान, कुक्कुर, सारमेय, शुन, शुनक, वृकारि।
कौआ—काक, कागा, काण, वायस, आत्मघोष, श्रावक।
कोयल—कलकंठ, कोकिला, कोकिल, श्यामा, हरि, वनप्रिय, मधुगायन।
क्रोध—अमर्ष, आमर्षण, कोप, क्षोभ, गुस्सा, रोष, झल्लाहट।
क्षमा—तितिक्षा, मार्जना, सहन, सहनशीलता, शांति।
घर—गृह, सदन, निकेतन, गेह।
गंगा—अलकनंदा, देवापगा, नदीश्वरी, सुरनदी, सुरसरि, सुरापगा, मंदाकिनी।
गधा—खर, गदहा, गर्दभ, धूसर, बालेय, रासभ, शंखकर्ण।
गर्मी—आतप, उष्मा, तपन, तपिश, ताप।
तालाब—जलाधर, जलाशय, ताल, पयोधर, पोखर।
तोता—करि, प्रियदर्शक, मंजुपाठक, वक्रचंचु, शुक, शूक, सुग्गा।
देवता—अजर, अदितिनंदन, अमर, निर्जर, सुर, आम्रतेश, असुसारि।
धनवान—धनिक, रईस, वैभवशाली, श्रीमत, धनाढ्य, दौलतमंद, सेठ।

नदी—अपगा, आपगा, तटनी, तटिनी, तरंगिणी, दरिया, सरिता, निर्झरिणी।
नाक—गंधनाली, गंधवहा, घ्राण, नक्रा, नासिका, सिंघाणी।
पंडित—आचार्य, कोविद, ज्ञानी, प्राज्ञ, बुध, मेधावी, मनीषी, विज्ञ।
पक्षी—अंडज, आकाशचारी, खग, खेचर, गगनचर, चटक, चिड़िया, सारंग।
पर्वत—अचल, आद्रि, कंदराकर, कूट, गिरि, तुंग, धराधर, पहाड़, भूधर।
पानी—अंबु, आप, उदक, जल, जीवन, तोय, नीर, सलिल, वारि।
पुत्र—अंगज, अपत्या, आत्मज, तनय, तनुज, तातल, नंद।
पुत्री—अंगजा, अपत्या, कन्या, तनया, दुहिता, धी, नंदना, बिटिया, बेटी।
पृथ्वी—अचला, अवनि, अहि, इड़ा, भूमि, धरती, धरा, धरणि, जगती।
फूल—कुसुम, पुष्प, पुहुप, प्रसून, सुमन, सुमनस्।
बादल—जलद, जलधर, जीभूत, धूमयोनि, नीरद, पयद, पयोद, वारिधर।
भारतवर्ष—आर्यभूमि, आर्यावर्त, पुण्यभूमि, भरतखंड, हिंद, हिंदुस्तान, भारत।
मछली—जलचरी, जलेशय, तिमि, मकर, मच्छ, तटस्थ, माछ, मीन।
माता—अंब, अंबक, अदिति, माँ, जननी, मैया, मातृका, माई।
राजमहल—प्रासाद, महल, राजमंदिर, सौध, राजभवन, राजप्रासाद, राजगृह।
राजा—नृप, नरेंद्र, नृपति, भूप, भूपग, भूपति, महीप, शासक।
रात—कादंबरी, क्षणदा, क्षपा, तपस्विनी, निशि, निशीथ, रजनी, रैन, विभावरी।
राम—अवधेश, जानकीवल्लभ, रघुनंदन, रघुपति, रघुराज, रघुवर, सीतापति।
शेर—केशरी, केसरी, केशी, पंचशिख, पंचानन, पशुराज, मृगनाथ, मृगेंद्र, व्याघ्र।
समुद्र—जलधि, वारिधि, सिंधु, सागर, सुधानिधि, रत्नगर्भ, जलनिधि, धीरनिधि।
सूर्य—सूरज, सूर्यदेव, हंस, हिरण्यरेता, भानु, भास्कर, प्रभाकर, दिवाकर, मार्तंड, रवि।
हाथी—गज, गजेंद्र, गयंद, दंती, द्विप, द्विरद, कारि, अगज, कुंजर।
हिमालय—गिरिराज, गिरीज, नगपति, नागराज, नगेश, पर्वतराज, शैलेंद्र, हिमाचल।

ग : समास

समास की परिभाषा—'समास' का शाब्दिक अर्थ है—'संक्षेप'। जब दो अथवा दो से अधिक पदों के बीच की विभक्ति अथवा योजक पदों को हटाकर एक संक्षिप्त पद बनाया जाता है, तो उस संक्षिप्त पद को ही 'समास' कहा जाता है। समास कर लेने पर प्रायः पदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है और समस्त-पदों को एक पद बनाकर अन्त में विभक्ति लगायी जाती है।

समस्त-पद—समास के नियम से मिले हुए शब्द-समूह को 'समस्त-पद' कहते हैं। उदाहरण के लिए **'राजपुरुषः'** समस्त-पद है।

विग्रह—समस्त-पद में मिले हुए शब्दों को, समास होने से पहले वाली मूल स्थिति में कर देने को ही 'विग्रह' कहते हैं। उदाहरण के लिए **'राजपुरुषः'** का विग्रह **'राज्ञः पुरुषः'** है।

समास के प्रकार

समास निम्नलिखित छह प्रकार के होते हैं—

1. द्वन्द्व समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. अव्ययीभाव समास,
4. कर्मधारय समास, 5. द्विगु समास 6. बहुव्रीहि समास।

विशेष—नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार **अव्ययीभाव** एवं **तत्पुरुष** समास का अध्ययन ही अपेक्षित है।

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्व-पद प्रधान होता है उसे व्याकरण में अव्यय कहते हैं और वह किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। अव्ययीभाव समास का क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग होता है; जैसे—

यथाशक्ति = यथा + शक्ति (शक्ति के अनुसार), प्रतिदिन = प्रति + दिन (दिन-दिन), आजन्म = आ + जन्म (जन्मपर्यन्त), भरपेट = भर + पेट (पेट भर के), यथासम्भव = यथा + सम्भव (जैसा सम्भव हो), निडर = नि + डर (बिना डर के)।

2. तत्पुरुष समास

इस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है और पहला शब्द गौण। पहले शब्द के कारक चिह्न का लोप करके दोनों शब्दों को मिला दिया जाता है। उदाहरणतः 'राजमहल' शब्द लें। इसमें 'महल' शब्द प्रधान है। इसका विस्तृत रूप है 'राजा का महल'। यहाँ पहले शब्द के साथ लगे कारक-चिह्न 'क' को हटाकर दोनों शब्दों को मिला दिया गया है, अतः यहाँ पर तत्पुरुष समास है।

कारकों के आधार पर तत्पुरुष समास के छह भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष—इसमें कर्मकारक के चिह्न 'को', का लोप किया जाता है। जैसे–स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त। देशगत = देश को गया हुआ।

(ii) करण तत्पुरुष—इसमें करण कारक के चिह्न 'से', 'के द्वारा' का लोप रहता है। जैसे—सूरकृत = सूर के द्वारा कृत। मदान्ध = मद से अन्धा। स्वर्णांकित = स्वर्ण से अंकित। शीर्षासन = शीर्ष के द्वारा आसन।

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष—इसमें सम्प्रदान कारक के चिह्न 'के लिए' का लोप रहता है। जैसे—नाट्यशाला = नाट्य के लिए शाला। बलिपशु = बलि के लिए पशु। विश्रामगृह = विश्राम के लिए गृह।

(iv) अपादान तत्पुरुष—इसमें अपादान कारक के चिह्न 'से' का लोप रहता है। जैसे—जन्मान्ध = जन्म से अन्धा। जीवनमुक्त = जीवन से मुक्त। जातिच्युत = जाति से च्युत।

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष—इसमें सम्बन्ध कारक के चिह्न 'का', 'की', 'के' का लोप रहता है। जैसे—देवपुत्र = देवता का पुत्र। राजपुत्र = राजा का पुत्र। विचाराधीन = विचार के अधीन। सूर्योदय = सूर्य का उदय। दुर्गपति = दुर्ग का पति। जलराशि = जल की राशि। दीपलोक = दीपों का आलोक।

(vi) अधिकरण तत्पुरुष—इसमें अधिकरण कारक के चिह्न 'में', 'पर' का लोप रहता है। जैसे—नगरवास = नगर में वास। देश-प्रवेश = देश में प्रवेश। विद्या-प्रवीण = विद्या में प्रवीण। आपबीती = अपने पर बीती हुई।

घ : मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा—मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'अभ्यास' या 'बातचीत'। हिन्दी भाषा में यह 'शाब्दिक अर्थ से भिन्न अन्य अर्थ' में रूढ़ हो गया है।

परिभाषा—ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए, तो उसे मुहावरा कहते हैं।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली, मनमोहक तथा प्रवाहमयी बनाने में सहायता मिलती है। मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग से नहीं।

लोकोक्तियाँ—यह दो शब्दों से मिलकर बना है—लोक + उक्ति; अर्थात् किसी क्षेत्र-विशेष में कही हुई बात।

परिभाषा—लोकोक्तियाँ भूतकाल के लोक-अनुभवों का परिणाम होती हैं तथा वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

मुहावरों का अर्थ व उनका प्रयोग

1. **अक्ल का दुश्मन होना**—महामूर्ख होना।
   यार! तुम तो सचमुच ही *अक्ल के दुश्मन* हो।
2. **अक्ल पर पत्थर पड़ना**—बुद्धि नष्ट होना।
   परीक्षा भवन में घुसते ही मेरी *अक्ल पर पत्थर* पड़ गये।
3. **अन्धे की लकड़ी होना**—गरीबों का सहारा होना।
   इस बुढ़ापे में तुम्हीं मुझ *अन्धे की लकड़ी* हो।
4. **अपना उल्लू सीधा करना**—अपना मतलब निकालना।
   नेता लोग केवल *अपना उल्लू सीधा करने* की ताक में रहते हैं।

5. अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारना—अपना अहित करना।
इस समय छात्र पठन-पाठन में मन न लगाकर *अपने ही पाँव में कुल्हाड़ी* मार रहे हैं।

6. अरहर की टट्टी में गुजराती ताला—मामूली चीज पर अधिक खर्च करना।
फटी जैकेट में सोने के बटन क्या हैं—*अरहर की टट्टी में गुजराती ताला।*

7. आकाश-पाताल एक करना—अधिक परिश्रम करना।
उसे ढूँढ़ने के लिए मैंने *आकाश-पाताल एक कर दिया।*

8. आटा गीला होना—विपत्ति पड़ना।
बरसात में घर क्या गिर गया, गरीबी में *आटा गीला* हो गया।

9. आस्तीन का साँप होना—मित्रवत् व्यवहार करके धोखा देना।
तुम तो *आस्तीन का साँप* निकले, जाकर सारा भेद शत्रु को बता दिये।

10. आँख का अंधा नाम नैनसुख—नाम के अनुरूप गुण का न होना।
नाम कपूरचन्द और गंध गोबर की भी नहीं। यार! तुम तो *आँख के अंधे नाम नैनसुख* की कहावत सचमुच चरितार्थ करते हो।

11. आँख खुलना—होश में आना, वास्तविकता का ज्ञान होना।
गुरु के मिलने के बाद मेरी *आँख खुल* गयी।

12. आँखें चार होना—आमने-सामने होना।
जब *आँखें चार होती हैं* मुहब्बत हो ही जाती है।

13. आँख दिखाना—रोब जमाना।
किसी के *आँख दिखाने से* मैं क्षमा-याचना नहीं कर सकता।

14. आँखों का तारा होना—अत्यन्त ही प्रिय होना।
बालक माँ की *आँखों का तारा* होता है।

15. आँखों पर परदा पड़ना—भ्रम में पड़ना।
तुम्हारी आँखों पर पर्दा पड़ा है अन्यथा अब तक तुम सँभल गये होते।

16. आँख में धूल डालना (झोंकना)—प्रत्यक्ष धोखा देना।
मुझे तुम्हारी सारी करतूत ज्ञात हो गयी है। मेरी *आँख में धूल डालने* का प्रयत्न मत करो।

17. ईंट से ईंट बजाना—किसी घर या नगर को बरबाद करना।
आततायियों ने उसके घर की *ईंट से ईंट बजा* दी और वह बेघर हो गया।

18. ईद का चाँद होना—बहुत प्रतीक्षा के बाद मिलना।
तुम्हारे तो अब दर्शन दुर्लभ हो गये हैं, बिल्कुल *ईद के चाँद* हो गये हो।

19. ऊँट के मुँह में जीरा—बिल्कुल अपर्याप्त होना।
बाढ़ पीड़ितों को दी गयी सहायता बिल्कुल *ऊँट के मुँह में जीरा* है।

20. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे—दोषी व्यक्ति द्वारा दूसरों पर ही दोषारोपण किया जाना।
झगड़े में राम ने ही पहले लाठी चलायी और *उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे* की कहावत चरितार्थ कर मुझे ही अपराधी बता रहा है।

21. एक अनार सौ बीमार—एक वस्तु के लिए बहुत से व्यक्तियों द्वारा प्रयत्न करना।
लाइब्रेरी में पक्षियों से सम्बन्धित एक ही पुस्तक है और उसकी माँग करने वाले अनेक हैं। यह तो वही बात हुई कि *एक अनार सौ बीमार।*

22. अंगूर खट्टे होना—न प्राप्त हो सकनेवाली वस्तु की निन्दा और उपेक्षा करना।
अलभ्य वस्तु के सम्बन्ध में अक्सर लोग कह देते हैं कि *अंगूर खट्टे हैं।*

23. अंधे के हाथ बटेर लगना—बिना प्रयास प्राप्ति होना।
परीक्षा के लिए तैयारी न करने पर भी मैं पास हो गया, यही समझो कि *अन्धे के हाथ बटेर लग गयी।*

24. एक पंथ दो काज—एक ही प्रयास में दो काम होना।
बनारस युवक-समारोह में जाने से समारोह भी देखा जायेगा और गंगा स्नान भी होगा। इस प्रकार *एक पंथ दो काज* हो जायेंगे।

25. कान पर जूँ न रेंगना—किसी प्रकार की चिन्ता न होना।
उससे बार-बार इस बात को कहा गया, किन्तु *उसके कान पर जूँ तक न रेंगी।*

26. कान में तेल डाले बैठे रहना—किसी बात को अनसुना करना।
जनता हाकिमों से बिजली की गड़बड़ी की शिकायत करती है, किन्तु वे कान में तेल डाले बैठे हैं।

27. कुएँ का मेंढक बनना—सीमित ज्ञान रखना।
देहाती लोग आज भी *कुएँ के मेढक बने हैं।*

28. कोल्हू का बैल होना—निरन्तर काम करना, एक ही रास्ते पर चलते रहना।
किसान सालों-साल *कोल्हू के बैल बने रहते हैं।* उन्हें कभी आराम नहीं मिलता।

29. कलेजा ठण्डा होना—चैन पड़ना, शान्ति मिलना।
श्याम का दीवाला निकल जाने पर राम का *कलेजा ठण्डा हो गया।*

30. कलेजे पर साँप लोटना—किसी अप्रिय या असह्य बात या स्थिति के कारण देर तक दुःखी रहना।
राम के रहन-सहन को देखकर उनके पड़ोसी के *कलेजे पर साँप लोटने लगा।*

31. काला अक्षर भैंस बराबर—बिल्कुल अनपढ़ होना।
निरक्षर व्यक्ति के लिए यह चिट्ठी पढ़ना *काला अक्षर भैंस बराबर है।*

32. खरबूजा को देखकर खरबूजा रंग बदलता है—संगत का प्रभाव पड़ता है।
तुम्हारे साथ रहकर कक्षा के सारे लड़के बिगड़ गये। *खरबूजा को देखकर खरबूजा रंग बदलता ही है।*

33. गड़े मुर्दे उखाड़ना—पुराने झगड़े की बात को उठाना।
बीती बातों को छोड़िये, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

34. गागर में सागर भरना—थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना।
बिहारी ने अपने दोहा के माध्यम से *गागर में सागर भर दिया है।*

35. गुदड़ी के लाल होना—निम्न कुल में पैदा होकर गुणवान होना।
पता नहीं इसी विद्यालय के गरीब छात्रों में कितने *गुदड़ी के लाल छिपे हैं।*

36. गूलर का फूल होना—दुर्लभ होना।
इस शहर में शुद्ध घी मिलना *गूलर का फूल हो गया है।*

37. गले का हार होना—अत्यन्त प्रिय होना।
वीरों के लिए तो मृत्यु भी *गले का हार होती है।*

38. घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।
घड़ी चुरा लेने का आरोप जब उस पर साबित हो गया तो उस पर *घड़ों पानी पड़ गया।*

39. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात—सुख का चन्द रोज होना।
मनुष्य को धन पाकर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि *चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात* ही होती है।

40. चुल्लू भर पानी में डूबना अथवा घड़ों पानी पड़ना—लज्जित होना।
तुम्हारा छोटा भाई तुमसे आगे निगल गया और तुम यहीं पड़े हो। तुम्हें तो *चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।*

41. चोली और दामन का साथ होना—घनिष्ठता होना।
साहित्य और समाज में *चोली और दामन का साथ है।*

42. चार चाँद लगाना—शोभा बढ़ जाना।
विद्युत-प्रकाश से आज इस भवन पर *चार चाँद लग गया है।*

43. चिराग तले अँधेरा—अपना दोष अपने को न दिखाई पड़ना।
किसी की बुराई करने से पूर्व आप यह क्यों भूल जाते हैं कि *हर चिराग तले अँधेरा होता है।*

44. छक्के छुड़ाना—हिम्मत तोड़ देना।
राणा प्रताप ने अकबर की सेना के छक्के छुड़ा दिये।

45. जमीन पर पैर न पड़ना—अधिक घमण्ड करना।
आजकल उनके *पाँव जमीन पर नहीं पड़ते।*

46. जले पर नमक छिड़कना—दुःख को और अधिक बढ़ाना।
मोहन के परीक्षा में असफल होने पर मित्र ने उसे बधाई देकर *जले पर नमक छिड़का।*

47. टेढ़ी खीर होना—कठिन होना।
आजकल नौकरी मिलनी *टेढ़ी खीर हो गयी है।*

48. डूबते को तिनके का सहारा होना—निराश्रित की कुछ सहायता करना।
आपकी सहानुभूति मेरे लिए *डूबते को तिनके का सहारा है।*

49. तिल का ताड़ करना—तुच्छ बात को बहुत अधिक महत्त्व देना।
मन्त्रियों के कथन को लेकर समाचार-पत्र कभी-कभी *तिल का ताड़ बना देते हैं।*

50. दूर के ढोल सुहावने होना—दूर से अच्छा लगना।
राम के स्वभाव के तुम भले प्रशंसक हो, वे कैसे हैं यह मैं ही जानती हूँ। *दूर के ढोल तो सबको सुहावने लगते हैं।*

51. दाँत खट्टे करना—परास्त कर देना।
हमारे सिपाहियों ने शत्रु के *दाँत खट्टे कर दिये।*

52. दाल न गलना—वश न चलना।
उनके आगे हमारी बिल्कुल ही *दाल नहीं गल पाती।*

53. दो नावों पर चढ़ना—दोनों ओर होना।
तुम किसी एक ही पक्ष में रह सकते हो। *दो नावों पर नहीं चढ़ सकते।*

54. दाँतों तले उँगली दबाना—आश्चर्य प्रकट करना।
ताजमहल निर्माता की कारीगरी देखकर *दाँतों तले उँगली दबाना पड़ता है।*

55. नमक-मिर्च लगाना—बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना।
हमें *नमक-मिर्च लगाकर* बातें करना नहीं आता।

56. नाक रगड़ना—दीनतापूर्वक प्रार्थना करना।
वोट के लिए नेता लोग दर-दर *नाक रगड़ते फिरते हैं।*

57. नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना।
पुलिस को देखते ही जुआड़ी *नौ दो ग्यारह हो गये।*

58. नाक कटना—इज्जत चली जाना।
उसके पास कुछ खाने को नहीं था और घर में एकाएक मेहमान आ गये, परन्तु पड़ोसी की मदद से उनकी *नाक कटने से बच गयी।*

59. पत्थर पर दूब जमना—असम्भव काम होना।
सूर्यनाथ को बुढ़ापे में लड़का हुआ है। उनके लिए तो पत्थर पर दूब जमी है।

60. पाँचों अँगुलियाँ घी में होना—सभी प्रकार का आराम या लाभ होना, अच्छी बन पड़ना।
अब तुम उस फर्म के प्रबन्धक हो गये, तो तुम्हारी *पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं।*

61. फूले न समाना—अत्यधिक प्रसन्न होना।
अपने बच्चे की सफलता पर वे *फूले न समाये।*

62. भीगी बिल्ली बनना–अत्यन्त भयभीत होना।
गुरुजी के सामने लड़के *भीगी बिल्ली बने रहते हैं।*

63. मुँह में पानी आना–लालच होना।
मिठाई देखते ही बच्चे के *मुँह में पानी* भर आया।

64. लकीर का फकीर होना–अन्धविश्वासी होना।
धर्म के नाम पर *लकीर का फकीर होना ठीक* नहीं है।

65. लोहे के चने चबाना–कड़ी मेहनत करना।
कर्ण को मार देना *लोहे के चने चबाना था।*

66. सीधी उँगली से घी निकालना–सीधेपन से काम नहीं चलता।
बिना कड़ाई किये वह पैसा नहीं देगा। तुम नहीं जानते कि *सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।*

67. सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना–आरम्भ में ही संकट उपस्थित होना।
उसने जैसे ही स्वर्णकार का काम सँभाला, सरकार ने स्वर्ण नियन्त्रण नियम लागू कर दिया और उस पर *सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये।*

68. हाथ कंगन को आरसी क्या–प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है।
चलकर अपनी आँखों से ही सारा दृश्य देख लो। *हाथ कंगन को आरसी क्या?*

लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ

1. **आसमान से गिरा खजूर पे अटका**–किसी कार्य के पूरा होते-होते बाधा उत्पन्न हो जाना।
2. **अन्त बुरे का बुरा**–बुरे का परिणाम बुरा ही होता है।
3. **अन्त भला सब भला**–परिणाम अच्छा रहता है तो सब-कुछ अच्छा कहा जाता है।
4. **अन्धा क्या चाहे दो आँखें**–उपयोगी वस्तुओं का मिल जाना।
5. **अन्धों में काना राजा**–मूर्खों के समाज में कम ज्ञानवाला भी सम्मानित होता है।
6. **अक्ल बड़ी या भैंस**–शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि की शक्ति अधिक बड़ी होती है।
7. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता**–अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।
8. **आँखों का अन्धा नाम नैनसुख**–गुणों के न होने पर भी नाम गुणवान जैसा होना।
9. **आगे नाथ न पीछे पगहा**–कोई सगा-सम्बन्धी न होने पर निश्चिन्त होना।
10. **आधी तज सारी को धाय आधी मिले न सारी पाय**–लालच से कुछ भी नहीं मिलता है।
11. **आम के आम गुठलियों के दाम**–दुहरा लाभ उठाना।
12. **आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास**–किसी महान् कार्य करने का लक्ष्य बनाकर भी निम्न-स्तर के काम में लग जाना।
13. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे**–अपना दोष स्वीकार न करके उल्टा पूछनेवाले को ही डाँटना।
14. **ऊँट के मुँह में जीरा**–आवश्यकता से बहुत कम प्राप्त होना।
15. **ऊँची दूकान फीकी पकवान**–दिखावटी कार्य।
16. **ऊधो का लेना न माधो का देना**–बिल्कुल निश्चिंत, किसी से सम्बन्ध न रखना।
17. **एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा**–दुष्ट व्यक्ति दुष्टों का संग पाकर और बुरा हो जाता है।
18. **एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकतीं**–एक स्थान पर दो राजा नहीं हो सकते।
19. **एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है**–एक बुरा व्यक्ति सारे समाज को दूषित कर देता है।
20. **एक हाथ से ताली नहीं बजती**–झगड़ालू प्रकृतिवाले के अकेले रहने से झगड़ा नहीं हो सकता।
21. **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती**–बहुत थोड़ी-सी वस्तु से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती।

22. **कंगाली में आटा गीला**—विपत्ति में और विपत्ति का आ जाना।
23. **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगुआ तेली**—बड़ों से छोटों का क्या मुकाबला, बेमेल सम्बन्ध।
24. **काला अक्षर भैंस बराबर**—बिल्कुल पढ़ा-लिखा न होना।
25. **कोयले की दलाली में हाथ काले**—बुरी संगति से बदनामी होती है।
26. **खग जाने खग की ही भाषा**—पेशेवाला ही पेशेवाले की बात समझ सकता है।
27. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है**—देखा-देखी ही लोग अधिकतर काम करते हैं।
28. **खरी मजूरी चोखा काम**—पूरी मजदूरी देने पर ही काम अच्छा होता है।
29. **खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे**—अपनी करतूत पर लज्जित होकर किसी दूसरे को डाँटना-फटकारना।
30. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**—अधिक परिश्रम करने पर भी मनोवांछित फल न मिलना।
31. **गरीबी में आटा गीला करना**—मुसीबत पर मुसीबत आ जाना।
32. **गुड़ खाय गुलगुला से परहेज**—झूठा ढोंग रचाना।
33. **घर का दीपक बुझना**—निरवंश हो जाना।
34. **घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध**—किसी आदमी की प्रतिष्ठा अपने घर में कम होती है।
35. **घर की मुर्गी साग बराबर**—अपनी चीजें मूल्यवान नहीं समझी जातीं, घर के आदमी का आदर न करना।
36. **घर का भेदी लंका ढावै**—बाहरी की अपेक्षा अन्दरूनी शत्रु अधिक खतरनाक होते हैं।
37. **चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय**—बहुत कंजूसी।
38. **चार दिनों की चाँदनी फिर अंधियारा पाख**—थोड़े दिनों की खुशी उसके बाद दुःख ही दुःख है।
39. **चोर की दाढ़ी में तिनका**—अपराधी सदैव सन्देहयुक्त स्थिति में रहता है।
40. **चोर-चोर मौसेरे भाई**—बुरे व्यक्तियों में जल्दी मेल हो जाता है।
41. **जाके फटे न पैर बिवाई वो क्या जाने पीर पराई**—जो खुद मुसीबत में नहीं पड़ा, वह दूसरों की मुसीबतें कैसे जान सकता है।
42. **जिसकी लाठी उसकी भैंस**—ताकत से ही अधिकार मिलता है।
43. **डूबते को तिनके का सहारा**—मुसीबत में थोड़ी सहायता भी लाभदायक होती है।
44. **थोथा चना बाजे घना**—ओछा आदमी ज्यादा बढ़-चढ़कर बातें करता है।
45. **दूर के ढोल सुहावने**—दूर से साधारण वस्तु भी आकर्षक लगती है।
46. **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का**—कहीं भी ठौर न मिलना।
47. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा**—काम करना न जाननेवाले व्यक्ति द्वारा अन्य वस्तुओं में दोष निकालना।
48. **नौ नकद न तेरह उधार**—बाद में प्राप्त होनेवाले बड़े लाभ से तुरन्त मिलनेवाला थोड़ा लाभ अच्छा होता है।
49. **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद**—किसी वस्तु के गुणों को न जाननेवाला व्यक्ति उसके महत्त्व को नहीं समझ सकता।
50. **बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी**—यदि कोई मुसीबत आनी है तो उससे कब तक बचा जा सकता है।
51. **भागते भूत की लँगोटी भली**—जब कुछ न मिल रहा हो, तब थोड़ी-सी प्राप्ति भी सन्तोषजनक होती है।
52. **मन चंगा तो कठौती में गंगा**—शुद्ध मन हो तो घर में ही तीर्थ है।
53. **रस्सी जल गयी पर ऐंठन नहीं गयी**—दुर्दशा होने पर भी अकड़ न जाना।
54. **लकीर का फकीर होना**—पुरानी प्रथा पर चलना।
55. **सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली**—जीवन भर पाप करके अन्त में धर्मात्मा बनने का ढोंग करना।
56. **सिर मुड़ाते ही ओले पड़े**—काम शुरू होते ही कठिनाई सामने आना।
57. **सौ सोनार की एक लोहार की**—अनेक क्रियाओं की अपेक्षा एक क्रिया का प्रभावशाली होना।
58. **हाथ कंगन को आरसी क्या**—प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए गवाही की क्या आवश्यकता।
59. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात**—उन्नतिशील के लक्षण प्रारम्भ से ही अच्छे होते हैं। ❑❑❑

संस्कृत व्याकरण

(क) सन्धि

सन्धि का शाब्दिक अर्थ है–'मेल' या 'जोड़'। इस प्रकार दो वर्णों (स्वर, व्यञ्जन या विसर्ग) के मेल के परिणामस्वरूप; उन वर्णों में होनेवाले ध्वनि सम्बन्धी परिवर्तन को ही 'सन्धि' कहा जाता है। **जैसे–**

विद्या + आलय:	= विद्यालय:	(आ + आ = आ)
नदी + ईश:	= नदीश:	(ई + ई = ई)
हिम + आलय:	= हिमालय:	(अ + आ = आ)

सन्धि के अलग करने की प्रक्रिया को 'सन्धि-विच्छेद' कहते हैं। **जैसे–**

पुस्तकालय:	= पुस्तक + आलय:	(आ = अ + आ)
देवालय:	= देव + आलय:	(आ = अ + आ)

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं–

(1) स्वर सन्धि (2) व्यञ्जन सन्धि (3) विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि

परिभाषा– स्वरों का स्वरों के साथ मेल होने पर उनमें जो ध्वनि सम्बन्धी परिवर्तन होता है, उसे 'स्वर सन्धि' कहते हैं।

स्वर सन्धि के मुख्य रूप से निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं–

(1) दीर्घ सन्धि
(2) गुण सन्धि
(3) यण् सन्धि
(4) वृद्धि सन्धि
(5) अयादि सन्धि।

(पाठ्यक्रम में स्वर सन्धि के अन्तर्गत केवल दीर्घ एवं गुण सन्धि ही निर्धारित हैं)

(1) दीर्घ सन्धि

सूत्र–'अक: सवर्णे दीर्घ:।'

नियम–यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर अ, इ, उ, ऋ के बाद क्रमश: ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आयें तो दोनों के मिलने से क्रमश: दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ हो जाता है। **उदाहरणार्थ–**

(क)	मद	+	अन्ध:	=	मदान्ध:	अ	+	अ	=	आ
	धर्म	+	अन्ध:	=	धर्मान्ध:	अ	+	अ	=	आ
	औषध	+	आलय:	=	औषधालय:	अ	+	आ	=	आ
	हिम	+	आलय:	=	हिमालय:	अ	+	आ	=	आ
	विद्या	+	अध्ययनम्	=	विद्याध्ययनम्	आ	+	अ	=	आ
	विद्या	+	आतुर	=	विद्यातुर	आ	+	आ	=	आ
	महा	+	आशय:	=	महाशय:	आ	+	आ	=	आ
	हित्वा	+	अर्थकामान्	=	हित्वार्थकामान्	आ	+	अ	=	आ
	धन	+	आगम:	=	धनागम:	अ	+	आ	=	आ
(ख)	कवि	+	इन्द्र:	=	कवीन्द्र:	इ	+	इ	=	ई
	रवि	+	ईश:	=	रवीश:	इ	+	ई	=	ई

	वारि	+	ईश:	=	वारीश:	इ	+	ई	=	ई
	नदी	+	ईश:	=	नदीश:	ई	+	ई	=	ई
	मालती	+	इच्छति	=	मालतीच्छति	ई	+	इ	=	ई
	मही	+	ईश:	=	महीश:	ई	+	ई	=	ई
(ग)	गुरु	+	उपदेश:	=	गुरूपदेश:	उ	+	उ	=	ऊ
	भानु	+	उदय:	=	भानूदय:	उ	+	उ	=	ऊ
	वधू	+	उत्सव:	=	वधूत्सव:	ऊ	+	उ	=	ऊ
	अम्बु	+	ऊर्मि:	=	अम्बूर्मि:	उ	+	ऊ	=	ऊ
	वधू	+	ऊढा	=	वधूढा	ऊ	+	ऊ	=	ऊ
	सु	+	उक्ति:	=	सूक्ति:	उ	+	उ	=	ऊ
	विष्णु	+	उदय:	=	विष्णूदय:	उ	+	उ	=	ऊ
(घ)	पितृ	+	ऋणम्	=	पितृणम्	ऋ	+	ऋ	=	ॠ
	होतृ	+	ऋकार:	=	होतृकार:	ऋ	+	ऋ	=	ॠ
	मातृ	+	ऋणम्	=	मातृणम्	ऋ	+	ऋ	=	ॠ

(2) गुण सन्धि

सूत्र– 'आद्‌गुणः।'

नियम– यदि अ अथवा आ के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आयें तो उनके स्थान पर क्रमश: ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है। **उदाहरणार्थ–**

(क)	उप	+	इन्द्र:	=	उपेन्द्र:	अ	+	इ	=	ए
	नर	+	ईश:	=	नरेश:	अ	+	ई	=	ए
	एव	+	इह	=	एवेह	अ	+	इ	=	ए
	महा	+	इन्द्र:	=	महेन्द्र:	आ	+	इ	=	ए
	तथा	+	इति	=	तथेति	आ	+	इ	=	ए
	नर्मदा	+	ईश्वर:	=	नर्मदेश्वर:	आ	+	ई	=	ए
	गण	+	ईश:	=	गणेश:	अ	+	ई	=	ए
	सर्व	+	ईश:	=	सर्वेश:	अ	+	ई	=	ए
	जीवित	+	ईश:	=	जीवितेश:	अ	+	ई	=	ए
	रमा	+	ईश:	=	रमेश:	आ	+	ई	=	ए
(ख)	भाग्य	+	उदय:	=	भाग्योदय:	अ	+	उ	=	ओ
	गंगा	+	उदकम्	=	गंगोदकम्	आ	+	उ	=	ओ
	समय	+	उचित	=	समयोचित	अ	+	उ	=	ओ
	नव	+	ऊढा	=	नवोढा	अ	+	ऊ	=	ओ
	महा	+	ऊर्मि:	=	महोर्मि:	आ	+	ऊ	=	ओ
	देश	+	उन्नति:	=	देशोन्नति:	अ	+	उ	=	ओ
	सागर	+	ऊर्मि:	=	सागरोर्मि:	अ	+	ऊ	=	ओ
	सर्वगुण	+	उपेत:	=	सर्वगुणोपेत:	अ	+	उ	=	ओ
(ग)	वसन्त	+	ऋतु:	=	वसन्तर्तु:	अ	+	ऋ	=	अर्
	महा	+	ऋषि:	=	महर्षि:	आ	+	ऋ	=	अर्
	देव	+	ऋषि:	=	देवर्षि:	अ	+	ऋ	=	अर्
(घ)	तव	+	ऌकार:	=	तवल्कार:	अ	+	ऌ	=	अल्
	मम	+	ऌकार:	=	ममल्कार:	अ	+	ऌ	=	अल्

(ख) संज्ञा शब्द-रूप

1. राम शब्द (अकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

[**संकेत**– बालक, सूर्य, चन्द्र, जन, पुत्र, सिंह, ईश्वर आदि अकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप 'राम' के समान ही होते हैं।]

2. हरि शब्द (इकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

[**संकेत**– मुनि, कवि, रवि, कपि, अरि, गिरि, ऋषि, विधि, यति, मणि, उदधि, भूपति इत्यादि इकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप हरि के समान होते हैं।]

3. भानु शब्द (उकारान्त पुँलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

[**संकेत**– उकारान्त पुँलिङ्ग शब्द गुरु, पशु, शत्रु, प्रभु, विष्णु आदि के रूप भानु की तरह ही होते हैं।]

4. अस्मद् (मैं, हम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः

चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः, नौ	अस्मासु

(ग) धातु-रूप

1. गम् (जाना) धातु

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार ('चाहिए' के अर्थ में)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

2. भू (होना) धातु

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार ('चाहिए' के अर्थ में)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

3. कृ (करना) धातु

लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार ('चाहिए' के अर्थ में)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
मध्यम पुरुष	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

♦♦♦

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद

अनुवाद करने के साधारण नियम

1. अनुवाद करते समय सबसे पहले हमें वाक्य का कर्त्ता ढूँढ़ना चाहिए। क्रिया से पहले कौन के उत्तर में आने वाली वस्तु कर्त्ता होती है।
2. कर्त्ता यदि एकवचन में हो तो प्रथमा एकवचन का रूप और द्विवचन में हो तो प्रथमा द्विवचन का रूप रखना चाहिए।
3. इसके पश्चात् कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए कि कर्त्ता प्रथम पुरुष में है कि मध्यम पुरुष में है कि उत्तम पुरुष में है।
4. कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने के पश्चात् क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए। फिर क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए।
5. तत्पश्चात् वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों के रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।
6. शब्दों के स्थान के लिए संस्कृत में स्वतन्त्रता रहती है। आप चाहे कर्त्ता पहले रखिये या कर्म अथवा क्रिया, कोई प्रतिबन्ध नहीं है।
7. कर्त्ता और क्रिया के पुरुष के वचन में साम्य होता है अर्थात् जिस पुरुष और जिस वचन में कर्त्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन की होगी।
8. विशेषण या विशेष्य के अनुसार ही लिंग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं; जैसे—

	ज्येष्ठः	=	बड़ा भाई
लिंग	ज्येष्ठ भगिनी	=	बड़ी बहिन
	ज्येष्ठ कलत्रं	=	बड़ी पत्नी
	हरितं पत्रं	=	हरा पत्ता
वचन	हरिते लते	=	दो हरी बेलें
	पक्वानि फलानि	=	पके फल
विभक्ति	तं बालकम्, तस्मिने ग्रामे	=	उस गाँव में

9. वर्तमान काल की वचन क्रिया में 'स्म' जोड़ देने से भूतकाल की क्रिया बन जाती है।

(1)

लट् लकार (वर्तमान काल) प्रथम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पठ = पढ़ना	पठति	पठतः	पठन्ति
गम = जाना	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
अति	**अतः**	**अन्ति**

(1) बालक पुस्तक पढ़ता है। (2) वे दोनों विद्यालय को जाते हैं। (3) आप वहाँ पढ़ते हैं। (4) वे सब कहाँ जाते हैं? (5) आदमी यहाँ आते हैं। (6) वे दोनों जाते हैं। (7) वह जोर से हँसता है। (8) आप सब यहाँ आते हैं। (9) राजा राज्य की रक्षा करता है। (10) घोड़ा वहाँ दौड़ता है।

अनुवाद–(1) बालकः पुस्तकं पठति। (2) तौ विद्यालयं गच्छतः। (3) भवान् तत्र पठति। (4) ते सर्वे कुत्र गच्छन्ति। (5) पुरुषाः अत्र आगच्छन्ति। (6) ते गच्छतः। (7) सः उच्चै हँसति। (8) भवन्तः अत्र गच्छन्ति। (9) राजा राज्यं रक्षति। (10) घोटकः तत्र धावति।

रक्ष् = रक्षा करना (रक्षति), लिख् = लिखना (लिखति), गम् = जाना (गच्छति), धाव् (दौड़ना) धावति आदि के रूप भी पठ् के समान हैं।

(2)

लट् लकार (वर्तमान काल) मध्यम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पठ् = पढ़ना	पठसि	पठथः	पठथ
दृश = देखना	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
पृच्छ = पूछना	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
याच् = माँगना	याचसि	याचथः	याचथ

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
असि	**अथः**	**अथ**

(1) तुम जल पीते हो। (2) तुम सब पुस्तकें पढ़ते हो। (3) तुम दोनों माँगते हो। (4) तुम दोनों पूछते हो। (5) तुम यह पुस्तक पढ़ते हो। (6) बन्दर कहाँ कूदते हैं। (7) सूर्य सवेरे निकलता है। (8) पशु जल पीते हैं। (9) वे दोनों तेज दौड़ते हैं। (10) तुम दोनों नमस्कार करते हो।

अनुवाद–(1) त्वं जलं पिबसि। (2) यूयं सर्वे पुस्तकानि पठथ। (3) युवां याचयः। (4) युवां पृच्छथः (5) त्वम इदं पुस्तकम् पठसि। (6) वानराः तत्र कूदन्ति। (7) सूर्यः प्रातः उदेति। (8) पशवः जलं पिवन्ति। (9) तौ तीव्र धावतः। (10) युवां नमस्कारं कुरुथः।

पा = पीना (पिबसि, पिबथः पिबथ), नी = ले जाना (नयसि, नयथः, नयथ), हृ = हरना, चुकाना, (हरसि, हरथः, हरथ), पच् = पकाना (पचसि, पचथः, पचथ)।

(3)

लट् लकार (वर्तमान काल) उत्तम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पठ् = पढ़ना	पठामि	पठावः	पठामः
पृच्छ (पृच्छ) = पूछना	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
दृश् (पश्य) = देखना	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
पा (पिब) = पीना	पिबामि	पिबावः	पिबामः

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

आमि	**आवः**	**आमः**

(1) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। (2) हम दोनों विद्यालय जाते हैं। (3) गुरुजी हमसे प्रश्न पूछते हैं। (4) मैं नमस्कार करता हूँ। (5) हम सुनते हैं। (6) हम दोनों कहते हैं। (7) हम दोनों दौड़ते हैं। (8) सीता मुझको देखती है। (9) तुम हम दोनों को देखते हो। (10) मैं चावल पकाता हूँ।

अनुवाद–(1) अहं पुस्तकं पठामि। (2) आवां विद्यालयं गच्छावः। (3) गुरुः अस्मान् प्रश्नान् पृच्छति। (4) अहं नमस्कारोमि। (5) वयं श्रृणुणमः। (6) आवां कथयामः। (7) आवां धावामः। (8) सीता मां पश्यति। (9) त्वम् आवां पश्यसि। (10) अहम् ओदनम् पचामि।

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

इष्यामि	**इष्यावः**	**इष्यामः**

(1) मैं पढ़ूँगा। (2) हम दोनों ले जायेंगे। (3) मैं माँगूँगा। (4) मैं किधर बैठूँगी। (5) हम दोनों पकायेंगे। (6) हम दोनों कल आग जलायेंगे। (7) हम लोग यहाँ पढ़ेंगे। (8) हम लोग शाम को खेलेंगे। (9) हम लोग खायेंगे। (10) दोनों पढ़ेंगे।

अनुवाद–(1) अहं पठिष्यामि। (2) आवां नेष्यावः। (3) अहं याचिष्यामि। (4) अहं कुत्र उपवेक्ष्यामि। (5) आवां पचवः। (6) आवां श्व वहिं ज्वालयिष्यावः। (7) वयमत्र पठिष्यामः। (8) वयं सायंकाले क्रिड़िष्यामः। (9) वयं खादिष्यामः। (10) आवां पठिष्यथः।

(4)

लङ् लकार (भूतकाल) प्रथम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
गम् = जाना	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
कृ = करना	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

अत्	**अताम्**	**अन्**

(1) वह गया। (2) उन्होंने किया। (3) राम ने पढ़ा। (4) तुम सब ने पढ़ा। (5) तू क्यों नहीं गया। (6) पुष्पा सोयी। (7) लड़कियों ने गाया। (8) उसने खाया। (9) वे दौड़े। (10) सूरज निकला।

अनुवाद–(1) सः अगच्छत्। (2) ते अकुर्वन्। (3) रामोऽपठत्। (4) सर्वेऽपठम्। (5) त्वं किमर्थं नागच्छत्। (6) पुष्पा अस्वयत्। (7) बालिका अगाय। (8) सः अखादत्। (9) ते अधावन्। (10) सूर्यः उदैत्।

(5)

लङ् लकार (भूतकाल) मध्यम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	अपठः	अपठतम्	अपठत
गम् = जाना	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
कृ = करना	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

अः	**अतम्**	**अत्**

(1) तुमने उपदेश दिया। (2) तूने पढ़ा। (3) तुमने काम किया। (4) तुम दोनों ने देखा। (5) तुमने मुख से पानी पिया। (6) तुम दोनों हँसे। (7) तुमने याद किया। (8) तुम दोनों चले। (9) तूने लिखा। (10) उसने समाचार-पत्र देखा।

अनुवाद–(1) त्वम् उपादेशः। (2) त्वम् अपठः। (3) त्वम् अकरोः। (4) युवाम् अपश्यतम्। (5) त्वमं मुखम जलम् अपिवैः। (6) युवम् असहतम्। (7) त्वम् स्मरणं अकरोत्। (8) युवाम् अचलतम्। (9) त्वम् अलिखः। (10) सः समाचारपत्रम् अपश्यत्।

(6)

लङ् लकार (भूतकाल) उत्तम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	अपठम्	अपठाव	अपठाम
गम् = जाना	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
कृ = करना	अकुरुवम्	अकुर्व	अकुर्म

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

अम्	**आव**	**आम**

(1) मैं पढ़ा। (2) हम दोनों ने पढ़ा। (3) हमने पढ़ा। (4) हम दोनों ने वह काम किया। (5) मैंने कहा। (6) मैंने आपसे प्रणाम किया। (7) हमने सूंघा। (8) हम दोनों ने सुना। (9) मैंने पूछा (10) हम नहीं आये।

अनुवाद–(1) अहम् अपठम्। (2) आवाम अपठाव। (3) वयम् अपठामः। (4) आवां तत्कर्म। (5) अहम् अवक्म्। (6) अहम् त्वां प्राणयम्। (7) वयम् अजिध्राम। (8) आवाम् अश्रुष्णाव। (9) अहम् अपृच्छम। (10) अहम् न अगच्छम्।

(7)

लोट् लकार (आज्ञा तथा आशीर्वाद) प्रथम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	पठतु	पठताम्	पठन्तु

कृ = करना	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
अस् = होता	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
दृश = देखना	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
पा = पीना	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
दा = देना	ददातु	दत्ताम्	ददतु

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

अतु	**अताम्**	**अन्तु**

(1) वे पढ़े। (2) वह खाये। (3) कुत्ता आज दौड़ा। (4) बच्चे वहाँ न खेलें। (5) वह सब जगह जावें। (6) घोड़ा दौड़े। (7) वे दोनों हँसे। (8) चिरंजीवी हो। (9) फल गिरा। (10) मोर नाचे। (11) बालक हँसे। (12) बन्दर दौड़े। (13) बालक पढ़े।

अनुवाद–(1) ते पठन्तु। (2) सः खादतु। (3) कुक्कुरः अद्य धावतु। (4) शिशवः तत्र न क्रीडन्तु। (5) सः सर्वत्र गच्छतु। (6) अश्वः धावतु। (7) (तू) तौ हसताम्। (8) चिरंजीव। (9) फलं पततु। (10) मयूरः नृत्यतु। (11) बालकः हसतु। (12) वानरः धावतु। (13) बालकः पठतु।

(8)

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

अ	**अतम्**	**अत**

(1) तुम शीघ्र आओ। (2) तुम कहो। (3) तुम सब इधर बैठो। (4) तू जल्दी ही जा। (5) तुम दोनों उधर पढ़ो। (6) तुम दोनों तेज चलो। (7) तुम जल्दी भोजन करो। (8) तुम गेंद फेंको। (9) दुःखी मत हो। (10) तुम सब पढ़ो। (11) तुम सब इस समय लिखो। (12) तुम कल आना।

अनुवाद–(1) त्वं शीघ्रं गच्छ। (2) त्वं कथय। यूयम् अत्र उपविशत। (4) त्वं शीघ्रम् एव गच्छ। (5) युवां तत्र पठतम्। (6) युवा वेगेन चलतम्। (7) त्वं शीघ्रं भोजनं कुरु। (8) कन्दुकं प्रक्षिप। (9) त्वं दुखी मा भव। (10) यूयम् पठत। (11) यूयम् इदानीं लिखत। (12) त्वं श्वः आगच्छ।

(9)

लोट् लकार (आज्ञा, आशीर्वाद) उत्तम पुरुष

क्रिया शब्द	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
वद् = कहना	वदानि	वदाव	वदाम
वस् = वसना	वसानि	वसाव	वसाम
उपविश् = बैठना	उपविशानि	उपविशाव	उपविशाम
पठ् = पढ़ना	पठानि	पठाव	पठाम्
कृ = करना	करवाणि	करवाव	करवाम

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

आनि	**आव**	**आम**

(1) मैं यह पाठ याद करूँ। (2) हम यह फूल सूंघें। (3) मैं क्या पढ़ूँ? (4) हम सब क्या पढ़ें? (5) क्या मैं उधर जाऊँ? (6) मैं आज करूँ। (7) हम दोनों बोलें। (8) हम सब वहाँ बसें। (9) हम दोनों यहाँ बैठें। (10) हम सब वहाँ चलें। (11) हम सब कहाँ खेलें? (12) हम दोनों क्या खायें?

अनुवाद–(1) अहम् इमं पाठं स्मरामि। (2) वयम् इदं पुष्पम् जिघ्राम्। (3) अहं किम् पठामि? (4) वयं सर्वे किम् पठाम्? (5) किमहं तत्र गच्छामि? (6) अहम् अद्य करवाणि। (7) आवां वदाव। (8) वयं सर्वे अत्र वसाम। (9) आवाम अत्रोपविशाव। (10) वयं सर्वे तत्र गच्छाम। (11) वयं सर्वे कुत्र क्रीडाम? (12) आवां किं खादाव?

(10)

विधिलिङ् (चाहिए) प्रथम पुरुष

क्रिया शब्द	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पठ् = पढ़ना	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः

गम् = जाना	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
लिख् = लिखना	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
गर्ज = गर्जना	गर्जेत्	गर्जेताम्	गर्जेयुः
वृषु = बरसना	वर्षेत्	वर्षेताम्	वर्षेयुः
पृच्छ = पूछना	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एत् **एतम्** **एयुः**

(1) उसे वहाँ जाना चाहिए। (2) राम को वहाँ बैठना चाहिए। (3) मोहन को आज नहीं खेलना चाहिए। (4) बदली को आज बरसना चाहिए। (5) बादल आज न गरजे। (6) मोर आज नाचे। (7) वे दोनों वहाँ न खावें। (8) सीता प्रातः पढ़े। (9) राम इस समय पूछे। (10) बालक वहाँ खेले। (11) आपको नहीं दौड़ना था।

अनुवाद–(1) सः तत्र गच्छेत्। (2) रामस्य तत्रोपविशेत्। (3) मोहना अद्यान क्रीडते। (4) वारिदोऽद्य वर्षेत्। (5) मेघोऽद्य न गर्जेत्। (6) मयूरोऽद्य नृत्येत। (7) तौ तत्र त खोदताम्। (8) सीता प्रातः पठेत्। (9) रामऽधुना पृच्छत्। (10) बालक तत्र क्रीडते। (11) भवान्नधावेत।

(11)

विधिलिङ् (चाहिए) मध्यम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	पठेः	पठेतम्	पठेत
गम् = जाना	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
चुर = चुराना	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
त्यज = छोड़ना	त्यजेः	त्यजेतम्	त्यजेत

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एः **एतम्** **एत**

(1) तुम्हें आज पढ़ना चाहिए। (2) तुमको आज लिखना चाहिए, (3) तुम दोनों को देखना चाहिए। (4) तुम्हें वहाँ बैठना चाहिए। (5) तुम सबको जाना चाहिए। (6) तुम सबको चुराना चाहिए। (7) तुम्हें बुरी आदत छोड़ना चाहिए। (8) तुम दोनों को याद करना चाहिए। (9) तुम सबको एक साथ खेलना चाहिए। (10) तुझे आज पानी पीना चाहिए।

अनुवाद–(1) त्वमद्य पठेः। (2) त्वमद्य लिखेः। (3) युवां पश्येतम्। (4) त्वं तंत्रोपविशेः। (5) यूयं सर्वे गच्छेत। (6) यूयं सर्वे चोरयेत। (7) त्वं दुर्व्यसनं त्यजेः। (8) युवां स्मरेत्। (9) यूयं सर्वे क्रीडते। (10) त्वमद्य जलं पिबे।

(12)

विधिलिङ् (चाहिए) उत्तम पुरुष

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	पठेयम्	पठेव	पठेम
गम् = जाना	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम
दृश् = ले जाना	नेययम्	नयेव	नयेम

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एवस् **एव** **एम्**

(1) हमें पढ़ना चाहिए। (2) हम सबको लिखना चाहिए। (3) मुझे अब चलना चाहिए। (4) हमें खाना चाहिए। (5) हमें बोलना चाहिए। (6) मुझे सूँघना चाहिए। (7) हमें देखना चाहिए। (8) हमें सबको देखना चाहिए। (9) हमें जाना चाहिए। (10) हम दोनों को हँसना चाहिए।

अनुवाद–(1) वयं पठेम। (2) वयं लिखेम। (3) अहमधुना गच्छेयम्। (4) वयं खादेम्। (5) वयं वदेम्। (6) अहम् जिघ्रेयम्। (7) वयं पश्येम। (8) वयं सर्वान् पश्येम। (9) वयं गच्छेम्। (10) आवां हसेव।

पत्र-लेखन

प्रार्थना-पत्र

अपनी बात को दूसरों तक लिखित रूप में पहुँचाने का सर्वोत्तम साधन व मानवीय भावों की लिखित अभिव्यक्ति का सुन्दर माध्यम पत्र है। पत्र-लेखन कला का इतिहास भी बहुत पुराना है। पत्र-लेखन की इस कला में समय के साथ परिवर्तन होते चले गये। अब पत्र पारिवारिकजन तक ही सीमित न रहकर अन्य अनेक विषयों—सामाजिक, व्यावसायिक, प्रशासनिक रूप में भी विकसित हो गये हैं।

पत्र प्रायः सभी लिख लेते हैं, लेकिन इस कला में पारंगत होना अलग बात है। छोटे-से कलेवर में हृदय में उमड़ते भावों को भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करना एक विशेष कला है। इस प्रकार एक अच्छा पत्र अपने लेखक के व्यक्तित्व की सजीव झाँकी प्रस्तुत करता है। वह लेखक व पाठक के अन्तरंग सम्बन्धों को उजागर करता है।

अच्छे पत्र के गुण

1. सरलता—पत्र की भाषा सरल व सुबोध होना चाहिए। जिस प्रकार सरल और निष्कपट व्यक्ति के व्यवहार का असर बहुत होता है, उसी प्रकार सरल, सुबोध पत्र भी पाठक के मन पर अत्यधिक प्रभाव डालता है।

2. स्पष्टता—पत्र में अपनी बात स्पष्ट तथा विनम्रता से कहनी चाहिए ताकि पाने वाला उसका आशय सही-सही समझ सके।

3. संक्षिप्तता—जहाँ तक हो पत्र संक्षेप में लिखना चाहिए। पत्र में कोई ऐसी बात नहीं लिखनी चाहिए जिससे पत्र में रुचि ही न रहे।

4. शिष्टाचार—पत्र-लेखक और पाने वाले के बीच में कोई-न-कोई सम्बन्ध होता ही है। आयु और पद में बड़े व्यक्तियों को आदरपूर्वक, मित्रों को सौहार्दपूर्वक और छोटों को स्नेहपूर्वक पत्र लिखना चाहिए।

5. केन्द्र में मुख्य विषय—औपचारिक अभिवादन के बाद सीधे मुख्य विषय पर आ जाना चाहिए।

पत्र-लेखन की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

(1) पत्र पूरी सावधानी से लिखना चाहिए। पत्र में जो बातें जहाँ और जिस प्रकार लिखी जानी चाहिए, उन्हें उसी प्रकार लिखना चाहिए।

(2) पत्र हमेशा शान्तचित्त होकर लिखना चाहिए और कभी ऐसी बात नहीं लिखनी चाहिए जिससे पत्र पाने वाले को किसी प्रकार की ठेस पहुँचे।

(3) पत्रोत्तर अवश्य देना चाहिए और समय पर देना चाहिए।

(4) पत्रोत्तर लिखते समय मूल पत्र को सामने रखना चाहिए, उसमें लिखी बातों का उत्तर उसी क्रम से लिखना चाहिए।

(5) पत्र लिखने के बाद उसे सावधानी से पढ़ लेने और पूरी तरह से सन्तुष्ट होने पर ही पोस्ट करना चाहिए।

(6) वांछित प्रभाव के लिए निजी पत्र हस्तलिखित होने चाहिए।

पत्रों के प्रकार

(क) व्यक्तिगत या सामाजिक पत्र—जो पत्र सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखे जाते हैं, वे व्यक्तिगत या सामाजिक पत्र कहलाते हैं।

(ख) व्यावसायिक पत्र—जो पत्र दूकानदारों, व्यापारियों, प्रकाशकों, कम्पनियों आदि को लिखे जाते हैं, वे व्यावसायिक पत्र कहलाते हैं।

(ग) कार्यालयीय पत्र—किसी व्यक्ति की ओर से शासन को या किसी शासन विभाग से दूसरे शासन विभाग को लिखे जाने वाले पत्र कार्यालयीय पत्र कहलाते हैं।

पत्र के मुख्य भाग

व्यक्तिगत या सामाजिक पत्र के निम्न अंग होते हैं—

(क) पत्र-लेखक का पता और तिथि—जिस कागज पर पत्र लिखना हो, उसके ऊपर दायीं ओर पत्र लिखने वाला अपना पता लिखता है, उसके नीचे पत्र लिखने की तिथि लिख दी जाती है; जैसे—

(ख) सम्बोधन और अभिवादन–पत्र के बायीं ओर अपने से बड़ों के लिए आदरसूचक, बराबर वालों के लिए प्रेमसूचक तथा छोटों के लिए स्नेहसूचक सम्बोधन लिखकर उसके नीचे अभिवादन लिखा जाता है; जैसे—

(1) पूजनीय माताजी,
सादर चरण-स्पर्श।
आदरणीय भाई साहब,
सादर प्रणाम।

(2) प्रिय मित्रवर (या मित्र का नाम),
सप्रेम वन्दे (या नमस्ते)।

(3) प्रिय पुत्र विपुल,
सुभाशीष (या प्रसन्न रहो)।

(ग) मुख्य कथ्य–पत्र का यह अंग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें कुछ लोग अनेक औपचारिक बातें लिखते हैं; जैसे— "हम लोग यहाँ पर कुशलपूर्वक हैं। आशा है आप भी ईश्वर की असीम अनुकम्पा से सकुशल होंगे।" आजकल की व्यस्तता को दृष्टिगत रखते हुए सीधे मुख्य कथ्य पर आ जाना अच्छा होता है। पत्र में अपनी बातें संक्षेप में और स्पष्ट कही जानी उत्तम रहती हैं। अनावश्यक बातों का समावेश करने पर मुख्य बातें प्रायः छूट जाती हैं। व्यावसायिक और कार्यालयीय पत्रों की भाषा औपचारिक और अपेक्षाकृत अधिक शिष्ट होती है।

(घ) पत्र की समाप्ति–पत्र समाप्त करने से पहले यथायोग्य शिष्टाचार प्रदर्शित करना आवश्यक है। समाप्तिसूचक शिष्टाचार अपने से बड़ों, समान स्तर के व्यक्तियों और अपने से छोटों के लिए अलग-अलग होते हैं—

(1) आदरणीय व्यक्तियों के लिए सम्मानसूचक शब्द—
आपका आज्ञाकारी, स्नेहाकांक्षी, कृपापात्र आदि।

(2) समान स्तर के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त शब्द—
आपका अभिन्न हृदय, आपका परम मित्र आदि।

(3) अपने से पद अथवा आयु में छोटों के लिए प्रयुक्त शब्द—
तुम्हारा शुभचिन्तक, परम हितैषी, शुभाकांक्षी आदि।

(4) व्यवसाय सम्बन्धी या अपरिचित व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त शब्द—
भवदीय, आपका आदि।

(5) सरकारी अधिकारियों के लिए प्रयुक्त शब्द—
आपका विश्वासपात्र, प्रार्थी, निवेदक, विनीत आदि।

उपर्युक्त शब्दों के ठीक नीचे पत्र-लेखक को अपने हस्ताक्षर स्पष्ट रूप में करने चाहिए (अपने नाम के पहले 'श्री' नहीं लगाया जाता)।

(ङ) जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जाय उसका पता–पत्र पाने वाले व्यक्ति का नाम व पता बहुत साफ और स्पष्ट लिखा जाना चाहिए। सर्वप्रथम पत्र पाने वाले व्यक्ति का नाम लिखें। उसके नाम के पहले श्री, सुश्री अथवा श्रीमान् आदि लगाना चाहिए। उसके बाद मकान नं., मोहल्ला या गली, शहर का नाम और पिन कोड लिखा होना चाहिए—

श्री अशोक कुमार
13 जीरो रोड, प्रयागराज।
पिन कोड–211003

प्रार्थना-पत्र

1. प्रधानाचार्य को पत्र—आकस्मिक अवकाश हेतु।

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,
के. पी. इण्टर कॉलेज, प्रयागराज

महोदय,

सविनय निवेदन है कि आज कॉलेज आते समय मेडिकल चौराहे पर मेरी साइकिल स्कूटर से भिड़ गयी। मेरे दोनों पैरों और सिर पर चोट लग गयी है। यद्यपि प्राथमिक उपचार करा लिया है, परन्तु दर्द के कारण कक्ष में पढ़ने में असमर्थ हूँ।

अतः आपसे निवेदन है कि मुझे दो दिन का 15 व 16 अप्रैल, 20............ का, आकस्मिक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
संतोष सिंह
कक्षा-9 'अ'

दिनांक 15.04.20.....

2. प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र—छात्रवृत्ति के लिए।

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,
जमुना क्रिश्चियन इण्टर कॉलेज, प्रयागराज

माननीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा नवीं 'अ' का छात्र हूँ। मैं सदैव ही अपनी कक्षा में उत्तम अंकों से उत्तीर्ण होता रहा हूँ। इतना ही नहीं, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा खेलों में भी सक्रिय भाग लेकर पुरस्कार जीतता रहा हूँ। कक्षा-8 में 74% अंक प्राप्त कर विद्यालय में पाँचवाँ स्थान भी प्राप्त किया है।

मैं आपसे विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरे घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। डर है कि कहीं अर्थाभाव के कारण मेरी पढ़ाई न छूट जाय। अतः आशा है कि आप मुझे विद्यालय कोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने की कृपा करेंगे। यदि मैं अर्थाभाव में न पढ़ सका तो मेरा भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। आप ही मुझे अध्ययन-विरत होने से बचा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित,

आपका आज्ञाकारी शिष्य
दिनेश
कक्षा-9 'अ'

दिनांक : 15.07.20.......

3. अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र

बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के कारण एक सप्ताह के अवकाश हेतु अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

अथवा

परिवार में आयोजित विवाहोत्सव के कारण विद्यालय के प्रधानाचार्य को अवकाश हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए।

अथवा

घर के विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए प्रधानाचार्य को अवकाश हेतु एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागराज (उ.प्र.)

विषय : एक सप्ताह के अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि दिनांक 26.03.20..... ई. को मेरे बड़े भाई की शादी है। शादी की व्यवस्था में मेरा योगदान भी अपेक्षित है, अतः दिनांक 26.03.20.... ई. से दिनांक 31.03.20..... तक मैं विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ।

कृपया मुझे उपर्युक्त एक सप्ताह का अवकाश प्रदान कर अनुगृहीत करें।

दिनांक 24.03.20......

आपका आज्ञाकारी शिष्य
आशीष
कक्षा-9 (बी)

4. अपने प्रधानाचार्य को संबोधित करते हुए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें अस्वस्थ होने के कारण एक दिन का अवकाश माँगा गया हो।

अथवा

अस्वस्थ होने के कारण अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को कैसे सूचित करेंगे?

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
आदर्श इण्टर कॉलेज, सहारनपुर (उ.प्र.)

विषय : एक दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं कल विद्यालय से घर लौटते समय वर्षा में भीगने के कारण ज्वरग्रस्त हो गया हूँ। अतः मैं आज विद्यालय आने की स्थिति में नहीं हूँ।

कृपया मुझे दिनांक 2.7.20..... का अवकाश प्रदान कर अनुगृहीत करें।

दिनांक : 2.7.20......

आपका आज्ञाकारी शिष्य
प्रेमचन्द्र गुप्ता
कक्षा-9 (बी)

5. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक सप्ताह के अवकाश हेतु आवेदन-पत्र लिखिए जिसमें अवकाश लेने के कारण का भी उल्लेख किया जाय।

अथवा

अत्यावश्यक गृह-कार्यवश अवकाश लेने के लिए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

अथवा

माँ की बीमारी के कारण चार दिन के अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

अथवा

अपने प्रधानाचार्य को सम्बोधित करते हुए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें किसी आवश्यक गृहकार्य में व्यस्त रहने के कारण कक्षा में उपस्थित न हो पाने के लिए दो दिन का अवकाश माँगा गया हो।

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
के. पी. इण्टर कॉलेज, प्रयागराज (उ.प्र.)

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आज अपने पिता जी के साथ अपने एक रुग्ण मित्र से मिलने कानपुर जा रहा हूँ। अतः मैं तीन दिन तक विद्यालय में अनुपस्थित रहूँगा।

कृपया मुझे दिनांक 5.7.20...... से 7.7.20...... तक का अवकाश प्रदान कर अनुगृहीत करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नरेन्द्र गर्ग
कक्षा-9 (सी)

6. मुख्य नगर अधिकारी को पत्र–शहर की सफाई हेतु

सेवा में,
मुख्य नगर अधिकारी,
नगर निगम, प्रयागराज (उ.प्र.)

महोदय,

निवेदन है कि आजकल प्रयागराज नगर की सड़कों की सफाई व्यवस्था संतोषजनक नहीं है। नगर की सड़कों पर सर्वत्र गंदगी फैली हुई है। नालियों में गन्दा पानी सड़ रहा है जिसमें दुर्गन्ध के कारण अनेक बीमारियों के फैलने की आशंका है। गन्दगी के कारण मच्छर पैदा हो रहे हैं।

चौक बाजार नगर का मुख्य व्यावसायिक केन्द्र है। नगर के सभी वर्गों के लोग वहाँ अपनी आवश्यकतानुसार सामान खरीदने आते हैं। नालियों और सड़कों की गन्दगी ग्राहक के मन पर कुप्रभाव डालती है। वे इस गंदगी को देखकर दुबारा इस ओर नहीं आते। दुकानदारों के व्यवसाय पर इसका असर पड़ रहा है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस अव्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दें। अपने स्वास्थ्य कर्मचारियों को यहाँ विशेष सफाई बनाये रखने का आदेश दें, ताकि यहाँ के निवासियों का जीवन बीमारियों से दूर रहे और व्यवसायियों के व्यवसाय में वृद्धि सम्भव हो सके।

भवदीय
प्रभाकर मिश्र

दिनांक 10.05.20...... अन्य व्यवसायीगण, चौक, इलाहाबाद।

7. जिलापूर्ति अधिकारी को पत्र–नवीन राशनकार्ड बनवाने हेतु।

सेवा में,
जिलापूर्ति अधिकारी, कानपुर।

महोदय,

निवेदन है कि अब तक मेरा परिवार मिर्जापुर में रहता आ रहा था। गत माह मेरा स्थानान्तरण कानपुर हो गया है। मैं सरकारी आवास, कलक्ट्री में निवास कर रहा हूँ। कृपया मुझे नवीन राशनकार्ड प्रदान कर अनुगृहीत करें।

नाम	**आयु**	**स्त्री/पुरुष सम्बन्ध**
रामकुमार	50 पुरुष	परिवार प्रमुख
श्रीमती सीमा	45 स्त्री	पत्नी
कु. प्रियंका	20 स्त्री	पुत्री
राहुल	18 पुरुष	पुत्र
संजय	16 पुरुष	पुत्र
		कुल सदस्य संख्या-5
		कुल यूनिट संख्या-5

प्रार्थी,
रामकुमार
क्वा. सं. 6/16, कलेक्ट्रेट परिसर,
कानपुर

संलग्न—पुराना राशनकार्ड
तिथि 20 फरवरी, 20......

8. समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र–रचना प्रकाशन हेतु।

सेवा में, दिनांक : 12.05.20.......
श्रीयुत् सम्पादक जी,
दैनिक जागरण, वाराणसी।

महोदय,

निवेदन है कि मैं रविवासरीय परिशिष्ट के लिए एक कविता प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ। इस कविता में मैंने देश की वर्तमान चिन्तनीय अवस्था को उभारा है। साथ ही वीर रस के उदात्त रूप का चित्रण कर युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना भरने का प्रयास किया है। मेरी कई कविताएँ देश के प्रतिष्ठित पत्रों में छप भी चुकी हैं। एक कविता हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'नवनीत' में भी कई वर्ष पूर्व छप चुकी है। आशा है, आप प्रस्तुत कविता पर विचार करेंगे।

कविता की अस्वीकृति की स्थिति में वापसी के लिए दो रुपये का टिकट लगा हुआ लिफाफा भी साथ में भेज रहा हूँ।

भवदीय
सुरेन्द्र

संलग्न–कविता 'आज की पुकार' शंकरगढ़, प्रयागराज, (उत्तर प्रदेश)

अभ्यास

1. शुल्क-मुक्ति हेतु अपने प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।
2. नगर की सफाई-व्यवस्था हेतु मुख्य नगर अधिकारी को पत्र लिखिए।
3. आकस्मिक अवकाश हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

❑❑❑